ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

पौष २०७७ जनवरी २०२१

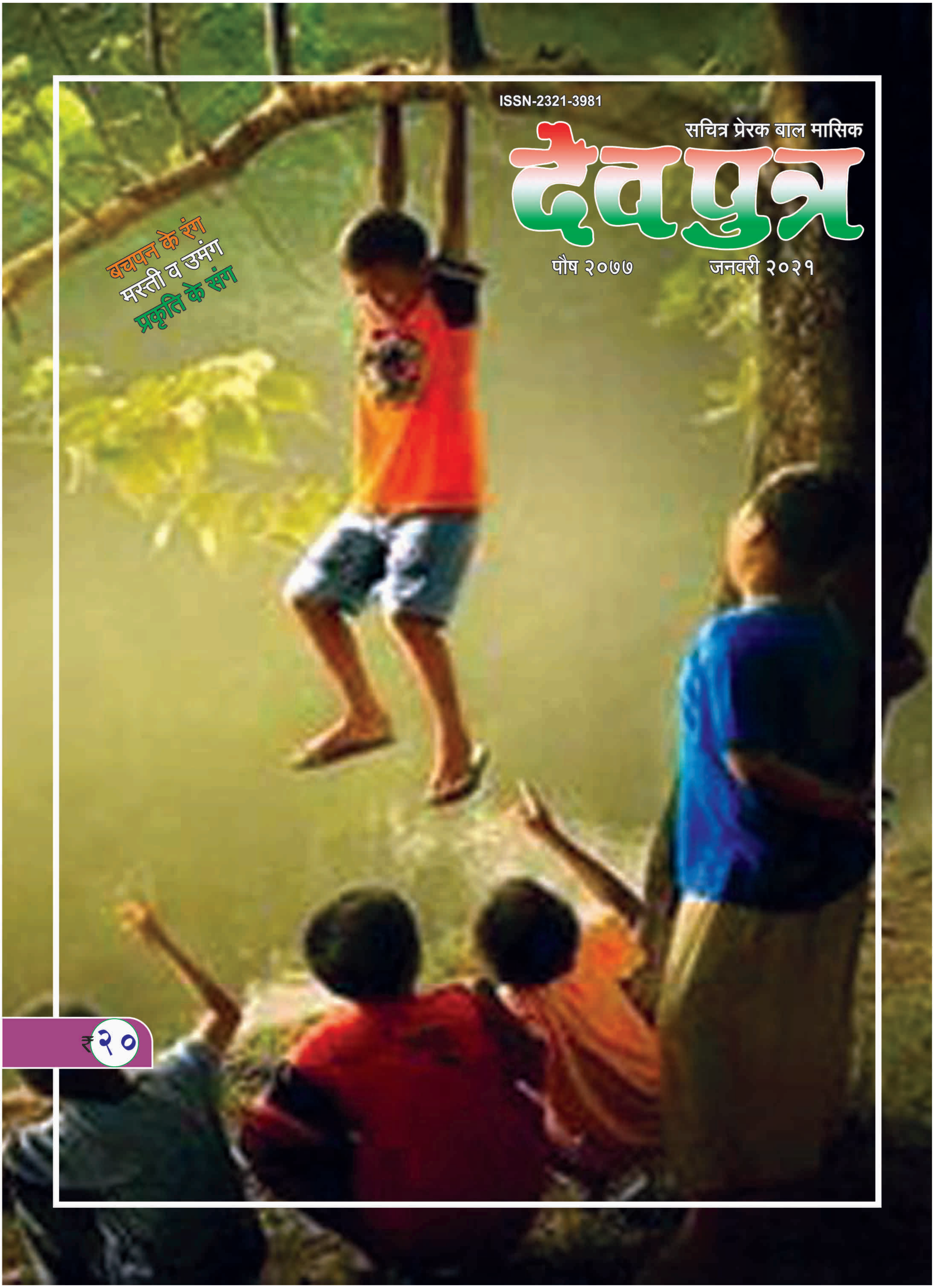

कविता

गणतंत्र दिवस

– सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

गणतंत्र दिवस गणतंत्र दिवस
भारत में इसकी धूमधाम।
छब्बीस जनवरी आई है
इसका प्रभात स्वर्णिम ललाम।।
यह याद दिलाया करता है
रावी तट पर जो प्रण ठाना।
ऊँचे स्वर में था घोष हुआ
है हमें अग्निपथ अपनाना।
होकर स्वाधीन जियेंगे हम
बलि हो चाहे सब हाड़ चाम।।
भारतवासी एकत्र हुये
राष्ट्र आज यह पर्व मनाता।
हरे श्वेत केसरिया रंग का
झंडा लो नभ में फहराता।
झर झर फूलों की वर्षा है
मानों इस भू पर देवधाम।।
देखी सारे जग ने झाँकी
भारत की शक्ति का स्वरूप।
जो खोया था वह पाया है
कैसा सुन्दर अद्भुत अनूप।
इस क्षण के लिए तपे थे हम
अब सफल हुये है सभी काम।।
यह उत्सव फीका हो न कभी
मंगल ही होता रहे सदा।
हो युद्ध कदाचित कभी यहाँ
तो मिले विजय उपहार सदा।
अनुपम यह ऐसा राष्ट्र बने
जिसका है भारतवर्ष नाम।।

– नोएडा (उ. प्र.)

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

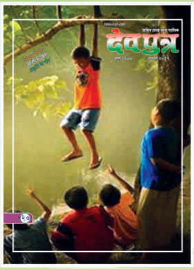

पौष २०७७ ▪ वर्ष ४१
जनवरी २०२१ ▪ अंक ७

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो,

इस माह अपना प्रिय गणतंत्र का महापर्व आ रहा है। एक ऐसा विशेष अवसर जब भारत का जन–जन अपने गणतंत्र के महत्व को जाने, समझे और अपने कर्त्तव्यों को क्रियान्वित करे।

पिछला पूरा वर्ष विकट परिस्थितियों में भी एक विशेष पाठशाला की भाँति बीता है। कोरोनाकाल में हमने 'स्व' के कई आयामों को अधिक गहराई से अनुभव किया। 'स्व' ही स्वतंत्रता का मूल है और इसी की रक्षा और व्यवस्था के लिए 'गणतंत्र' है। यह 'स्व' जितना दृढ़ होगा गणतंत्र भी उतना ही सुदृढ़ रहेगा। राष्ट्रीय सन्दर्भ में 'स्व' व्यक्तिगत नहीं रह जाता। 'स्व' एकात्म समाज की इकाई बन जाता है। इस आपत्काल में हमने 'स्वावलम्बन' का महत्व जाना। 'अपने हाथ जगन्नाथ' का एक और अर्थ जाना। लॉकडाऊन में जब हम घरों में बन्द थे अनेक कार्यों में परिवार ने उन कार्यों को स्वयं करने का आनंद लिया जिनके लिये हम दूसरों पर आश्रित रहते थे। परिवार इकाई का 'स्व', जब स्वावलंबी होने पर इतना सुखद लगा तो सोचिए यही स्वावलम्बन राष्ट्रीय और सामाजिक स्तर पर कितने गुना फलदायी और सुखद होगा। दूसरा 'स्व' स्वदेशी की अवधारणा समझ गया। केवल अपने देश में बनी वस्तु ही स्वदेशी है ऐसा नहीं तो व्यापक अर्थ में अपने प्रदेश, अपने नगर या ग्राम और अपने गली मोहल्ले की दुकानों, बाजारों में निर्मित अथवा बिकने वाली वस्तुओं का उपभोग कितना आत्मीय व सुगम होता है यह भी लॉकडाऊन ने बता दिया।

तीसरे 'स्व' का महत्व आपने 'स्वाध्याय' के रूप में जाना। जब सारे विद्यालय बन्द थे आपके शिक्षक, आपके सहपाठी कोई भी आपके पास न थे आपने अपने मन से पढ़ना सीखा नए संचार साधनों का सहयोग भी लिया पर यह पढ़ाई आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ और 'स्वयं समझने' की क्षमता का विकास भी आपने अनुभव किया।

'स्व' के चौथे अनुभव के रूप में आपने अवश्य अनुभव किया होगा कि आप अपने परिवार का भी विशेष स्वाध्याय कर पाए आपने अपनी परम्परागत भाषा बोली सीखी।

इतने ही नहीं और भी 'स्व' के कई आयाम आपको अनुभव हुए इन सबको कोरोना बीत जाने पर भी निरंतर रखिए 'स्व' ही हमारे आध्यामिक सांस्कृतिक, राष्ट्रीय व सामाजिक संविधान का मूलमंत्र है। 'स्व' से साधित, 'स्व' से सम्पन्न, 'स्व' से गौरवान्वित गणतंत्र सदैव अमर रहता है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- किसलय और निलय - नीतीश कुमार ०५
- गणतंत्र दिवस की सीख - ज्ञानदेव मुकेश ०९
- मोबाइल खेलों..... - डॉ. फकीरचन्द शुक्ला २१
- जहाँ चाह वहाँ राह - उषा सोमानी ३०
- बाँट लेंगे हम आधा..... - सीमा जैन 'भारत' ३४

आलेख

- तिरंगे की कहानी - रवि अतरोलिया १२
- स्वतंत्रता के आराधक.. - बनवारीलाल ऊमरवैश्य ३७
- जानें चाय के लाभ और. - डॉ. बी. एल. प्रवीण ४०
- दिग्विजयी हेमचन्द्र - डॉ. परशुराम गुप्त ४४

लोककथा

- एक लड्डू तीन मित्र - भूपिन्दर सिंह 'आशट' ४२

बाल लेखनी

- राष्ट्रीय एकता की भाषा - आद्या भारती १६
- योगदान - अनुज पाण्डेय १७
- कुसंगति का फल - शुभप्रताप सिंह ३२

कविता

- गणतंत्र दिवस - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ०२
- करे मन बल्ले बल्ले - महेन्द्र कुमार वर्मा १७
- शिशु गीत - विजयलक्ष्मी कोठारी २८
- मछली - रेखा लोढ़ा 'स्मित' ३९
- संविधान गीत - हरिलाल 'मिलन' ४५
- उजाला लाऊँ - मेराज रजा ४९
- छुपे रजाई में बैठे हैं - प्रभुदयाल श्रीवास्तव ५०
- पतंग - शुभम् पाण्डेय 'गगन' ५१

स्तंभ

- विषय एक कल्पना अनेक
  - देश हमारा - प्रो. शरद नारायण खरे १४
  - मेरा देश - मदन देवड़ा १४
  - भारत देश - चन्द्रकुमार डड़सेना १५
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी १८
- आओ ऐसे बनें - मदन गोपाल सिंघल २०
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २५
- संस्कृति प्रश्नमाला २६
- यह देश है वीर जवानों का १४ ३३
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - प्रो. राजीव तांबे - सुरेश कुलकर्णी ४६
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णु प्रसाद चौहान ४६
- पुस्तक परिचय ४८
- आपकी पाती ४९
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ५०

चित्रकथा

- गणतंत्र दिवस - देवांशु वत्स ११
- घमण्डी राजू - देवांशु वत्स २७
- समय - संकेत गोस्वामी ४७

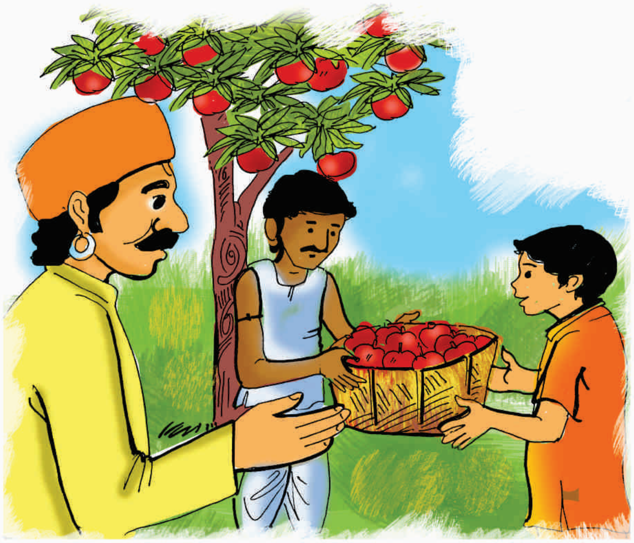

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - ''**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**'' आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

किसलय और निलय

– नीतीश कुमार

वीरपुर गाँव पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में किसलय और निलय नाम के दो भाई रहते थे। दोनों भाइयों की आयु क्रमश: चौदह और बारह वर्ष थी। दोनों भाई स्वभाव से बड़े नटखट और चंचल थे। दोनों भाईयों को नटखट करने में बड़ा आनंद आता था। वे अपने माता–पिता की बातों को भी अनसुना कर दिया करते थे।

इनके पिता गाँव के विद्यालय में ही शिक्षक थे। दोनों भाई उसी विद्यालय में पढ़ा करते थे। इनके पिता का गाँव में बड़ा सम्मान था। वे अपने सभी छात्र–छात्राओं को किसी भी तरह से कठिन विषय–वस्तु को साधारण और सरल शब्दों में उदाहरण देकर अच्छी तरह से समझा दिया करते थे।

वे दोनों भाइयों को एकाग्रचित्त होकर कोई भी कार्य करने के लिए कहते थे, परन्तु दोनों पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वे दोनों भाई कभी गाँव के मैदान में पतंग उड़ाया करते और कभी अपने घोड़े पर सवार होकर इधर–उधर घूमा करते थे। यह घोड़ा उनके पिता ने पिछले वर्ष मकर संक्रान्ति के अवसर पर नगर के मेले में खरीदा था।

इस बार मकर संक्रान्ति के समय दोनों भाई घोड़े पर सवार होकर नगर के मेले में जाना चाहते थे। मकर संक्रान्ति आने में अभी कुछ दिन बाकी थे। उनकी माँ ने सोचा कि एक ही जगह रहते–रहते दोनों भाइयों का मन ऊब गया है, इसलिए स्थान–परिवर्तन और मनोरंजन के लिए दोनों को कुछ दिनों के लिए नानी के घर भेज देना चाहिए।

यह बात माँ ने दोनों भाइयों और पिताजी को बताई। पिता ने तब स्थान–परिवर्तन की बात सोचकर उन्हें नानी के घर जाने की अनुमति दे दी। दोनों भाई नानी के घर जाने के नाम से ही बड़े प्रसन्न हुए।

दोनों ने घोड़े पर सवार होकर नानी के घर जाने का कार्यक्रम बनाया। माँ–पिताजी ने उसे घोड़े से नानी के घर जाने के लिए मना किया। परंतु दोनों ने उनकी एक बात न सुनी। दोनों ने माँ–पिता को आश्वस्त किया कि उन्हें घोड़े चलाने में कुशलता हो गई है और साथ ही उन्हें नानी के घर जाने का मार्ग भी अच्छी तरह से पता है।

उन दोनों का हठ देखकर माँ–पिताजी ने उन्हें घोड़े से ही नानी के घर जाने की अनुमति दे दी। उन्होंने दोनों भाइयों से कहा कि वे इधर–उधर छोड़कर सीधे जाने वाले मुख्य रास्ते से ही सावधानीपूर्वक घोड़े को चलाते हुए जगतपुर गाँव जाएँ। दोनों भाइयों ने कहा कि वे मुख्य रास्ते से ही सावधानीपूर्वक घोड़े को चलाते हुए नानी के घर जाएँगे।

अगले दिन दोनों भाई अपने नानी के घर जगतपुर गाँव के लिए निकले। घोड़े पर उन्होंने कई रंग–बिरंगी पतंगें, मिठाइयाँ और अपने पहनने के लिए कपड़े ले लिए। जगतपुर गाँव उनके गाँव से पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर था। दोनों भाई घोड़े पर सवार होकर मस्ती में नानी के घर की ओर जा रहे थे। कुछ आगे बढ़ने पर निलय ने किसलय से जंगल के रास्ते जगतपुर गाँव जाने की बात कही।

उसकी बात सुनकर किसलय बहुत प्रसन्न हुआ। वह भी जंगल के रास्ते होकर ही नानी के घर जाना चाहता था। उसने कहा कि जंगल के रास्ते से अगर नानी के घर जाया जाए तो वे शीघ्रता से पहुँच जाएंगे और साथ ही साथ

जंगल के मनोरम दृश्यों को भी देखने का आनंद लेंगे। यह सोचकर दोनों भाई बहुत खुश हुए और मस्त होकर जंगल के रास्ते से जगतपुर गाँव की ओर चलने लगे। जंगल के कच्चे रास्तों से कुछ आगे बढ़ने पर उन्हें दिशा का सही ज्ञान नहीं रहा और दोनों इस कारण से रास्ता भी भटक गए। किसलय ने तब साहस से काम लिया और कहा कि अभी शाम होने में काफी समय है। अगर हम जंगल के एक छोर को पकड़ कर चले तो कोई ना कोई गाँव अवश्य मिल जाएगा।

इसके बाद दोनों एक कच्ची पगडण्डी जैसे रास्ते को पकड़कर घोड़े पर बैठकर आगे बढ़ने लगे। जंगल घना था और दोनों इस कच्चे रास्ते से अनभिज्ञ भी थे। चलते–चलते वे दोनों जंगल के काफी अंदर प्रवेश कर गए, परन्तु उन्हें कोई भी गाँव दिखाई नहीं पड़ा। अब शाम भी हो चुकी थी। जंगल घना होने के कारण कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ रहा था, इसलिए डर के मारे निलय रोने लगा। किसलय को भी लगा कि वे दोनों अब बहुत बड़ी परेशानी में फंस गए हैं, लेकिन उसने किसी तरह से निलय को ढाढस बंधाया।

किसलय इधर–उधर दृष्टि घुमाकर देख रहा था। तभी उसे बहुत दूर दीपक की लौ जलते हुए दिखाई पड़ी। यह देखकर दोनों भाइयों में उत्साह आ गया। वे दोनों भाई तुरंत दीपक के लौ की ओर अपने घोड़े को बढ़ा दिया।

दीपक के पास पहुँचने पर दोनों ने देखा कि वहाँ पर एक वनवासी का बसेरा था। जंगल के उस शांत कोने में वनवासी दम्पत्ति रहा करते थे। वस्तुत: वे एक वानप्रस्थी थे जो प्रकृति सेवा और अध्यात्म साधना के साथ साथ वनवासियों को शिक्षित करने वहाँ वनवासी बन कर ही रहते थे।

वनवासी ने जब दोनों बच्चों को घोड़े पर बैठे हुए कुटिया के पास देखा तो वे आश्चर्य चकित हो गए। उनमें से एक ने तब पूछा कि इस घनघोर जंगल में वे दोनों कैसे पहुँच गए। दोनों भाइयों ने उन्हें विस्तार से रास्ता भटकने की बात बताई। वनवासी ने तब दोनों भाइयों को अपने साथ कुटिया में रखा और कहा कि कल वे उन्हें जंगल से बाहर निकालकर जगतपुर गाँव जाने वाले मुख्य रास्ते तक पहुँचा देंगे। वनवासियों की यह बात सुनकर उनकी जान में जान आ गई। उन्हें वनवासी परिवार के साथ अपनापन का बोध हो रहा था।

वनवासी ने रात्रि में खाने के लिए कंद–मूल दिए। घोड़े को उन्होंने एक खूंटे के सहारे कुटिया के बाहर बांध दिया और उसे भी खाने के लिए चारा दिया। उनमें से एक ने फिर दोनों भाइयों से पूछा कि– ''तुम दोनों भाई मकर संक्रांति मनाने अपने नानी के घर जा रहे हो तो मकर संक्रांति के बारे में तुम दोनों कुछ बताओ? इस दिन क्या–क्या खाया जाता है और इसे क्यों मनाया जाता है?''

किसलय ने तब बताया– ''मकर संक्रांति के दिन प्रात:काल स्नान कर सफेद जमी हुई मलाईदार दही, चूड़ा और गरम–गरम तिलकूट खाया जाता है।''

निलय ने फिर कहा कि– ''उस दिन तिल के लड्डू भी खाये जाते हैं और पतंगें भी उड़ाई जाती हैं।'' दोनों भाई मकर संक्रांति क्यों मनाई जाती है, यह नहीं बता पाए।

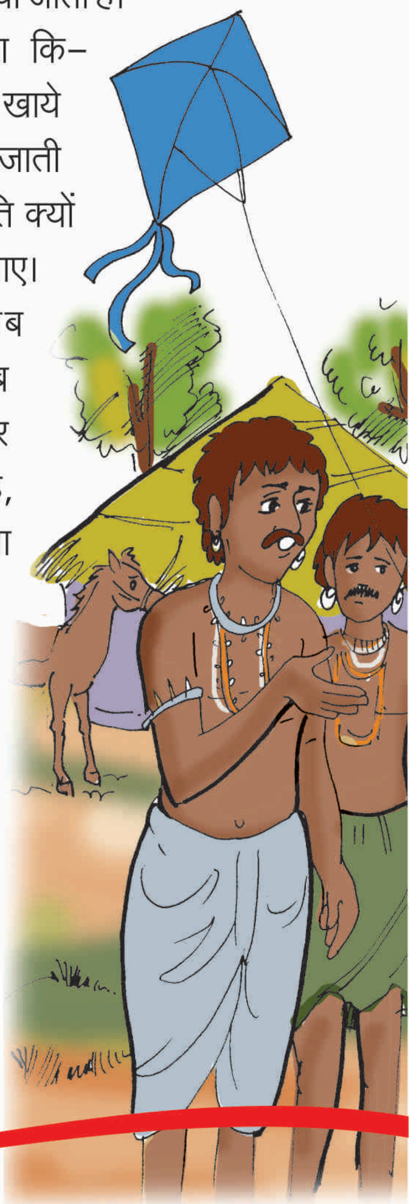

वनवासियों ने तब बताया कि पौष मास में जब सूर्य धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है, तब इस त्योहार को मनाया जाता है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य की उत्तरायण गति भी प्रारंभ होती है उत्तरायण को देवताओं का दिन कहा जाता है और साथ ही साथ इसे सकारात्मका का प्रतीक भी माना जाता है।

वनवासी की बातें सुनकर दोनों भाइयों को

बड़ा अच्छा लग रहा था। फिर सभी वनवासियों ने बारी–बारी से उन दोनों के परिवार और गाँव वालों के बारे में पूछा। दोनों भाई सभी से अच्छी तरह से घुल–मिल गए थे, इसलिए दोनों ने उन्हें अपने माँ–पिताजी और बाकी परिवार वालों के बारे में बताया। उनकी बातें सुनकर वनवासियों को पता चल गया कि ये दोनों भाई बड़े नटखट हैं और ये अपने माँ–पिताजी की बातों को भी नहीं सुना करते हैं। वनवासियों ने फिर दोनों भाइयों को जल्दी सोने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि वे उन्हें सुबह जगतपुर जाने वाले रास्ते तक पहुँचा देंगे।

सुबह चार बजे वनवासी परिवार उठ गया। उन्होंने दोनों भाइयों को भी सुबह उठा दिया। इसके बाद सभी ने नित्य कर्म करने के बाद योग और ध्यान किया। उन्होंने दोनों भाइयों को भी कुछ आसान योग सिखाए। दोनों भाइयों को जंगल के इस सुनसान भाग में वनवासी परिवार के साथ बड़ा आनंद आ रहा था। वनवासी परिवार ने तब उन्हें खाने के लिए कुछ फल दिए। घोड़े ने भी कुटिया के आसपास घूमकर अपना पेट भर लिया था।

जब दोनों भाइयों ने वनवासी के द्वारा दिए हुआ सारे फल खा लिए तब वनवासियों ने कहा कि तुम दोनों भाई अपने साथ रंग–बिरंगी पतंगें लेकर आये हो, तो क्यों न तुम दोनों में कुछ देर के लिए पतंग उड़ाने की एक प्रतियोगिता हो जाय, इसके बाद हम तुम्हें तुम्हारे गंतव्य मार्ग तक पहुँच देंगे। यह सुनकर दोनों भाई प्रसन्न हो गए।

वनवासियों ने दोनों भाइयों को जंगल की एक खुली जगह पर ले गए और पतंग उड़ाने के लिए कहा। दोनों भाइयों ने अपनी–अपनी पतंगें खोल लीं। कुछ ही देर में दोनों की पतंगे काफी ऊपर में उड़कर हवा में बातें करने लगी। पतंग उड़ने पर वनवासी ने दोनों भाइयों से पूछा कि– ''यह पतंग कैसे उड़ती है?'' निलय ने तब कहा कि– ''यह पतंग हवा के सहारे इतनी ऊपर तेजी से उड़ रही है।'' वनवासी ने फिर पूछा– ''और कोई माध्यम जिससे यह इतनी ऊपर उड़ रही है?'' तब किसलय ने कहा– ''यह पतंग डोरी और हवा के माध्यम से इतनी ऊँचाई पर उड़ रही है।

किसलय का उत्तर सुनकर वनवासी ने बहुत अच्छा कहा। फिर उन्होंने दोनों भाइयों को बताया कि– ''बच्चे भी पतंग के समान होते हैं। ये अनियंत्रित हो सकते हैं अगर इन्हें माता–पिता और अच्छे गुरु रूपी डोर ना मिले। अगर ये डोर टूट जाय या डोर इन्हें नियंत्रित ना कर सके तो ये बल खाकर ऊपर से सीधे नीचे गिर जायेंगे।''

वनवासी की यह बातें सुनकर दोनों भाइयों की आँखें खुल गईं। उन्हें पता चल गया कि उनके पिता उन्हें बार–बार अनुशासन में रहने और कोई भी कार्य एकाग्रचित्त होकर करने के लिए क्यों समझाते हैं। आज अगर वे दोनों माँ–पिता की बातों को मानते तो वे दोनों, इस प्रकार से जंगल में ना फंस पाते।

किसलय ने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया, क्योंकि उसे ज्ञात था कि अगर कल शाम के समय उन्हें वनवासी परिवार की कुटिया ना मिलती तो वे दोनों भाई कभी अपने गाँव वापस भी नहीं पहुँच पाते। उन दोनों भाइयों ने तब सभी वनवासी परिजनों को कहा कि– ''अब वे हमेशा अपने माँ–पिताजी की बातों को अच्छे से सुनेंगे और उनकी कही हुई बातों को मानेंगे।''

वनवासी परिवार को दोनों की बातें सुनकर अच्छा लगा। वनवासियों ने फिर दोनों भाइयों को जगतपुर गाँव जाने वाले मुख्य मार्ग तक पहुँचा दिया। दोनों भाइयों ने सभी के चरण–स्पर्श कर प्रणाम किया, क्योंकि आज उन्हें मकर संक्रांति के पहले एक अच्छी और महत्वपूर्ण शिक्षा मिली थी। दोनों भाई अब घोड़े पर सवार होकर प्रसन्न थे।

– देवगढ़ (झारखण्ड)

बिन्दु मिलाओ रंगभरो

– राजेश गुजर

गणतंत्र दिवस की सीख

– ज्ञानदेव मुकेश

जंगल में गणतंत्र दिवस की तैयारी जोर–शोर से चल रही थी। जंगल के सभी विद्यालयों में परेड का अभ्यास हो रहा था। किन्तु गपलू बंदर और उसके तीनों भाइयों को इससे कोई मतलब नहीं था। वे बड़े उधमी थे। उन्हें शाला जाने और पढ़ाई–लिखाई से कोई लेना–देना नहीं था। वे सुबह से ही पेड़ों पर उधम मचा रहे थे।

दीनू भालू काका ने यह देखा तो उन्हें पास बुलाया और उन्हें गणतंत्र दिवस का महत्व बतलाया। उन्होंने बताया कि आज ही के दिन १९५० में देश का संविधान लागू हुआ था। उस दिन यह तय हुआ कि देश के सारे काम संविधान में लिखी बातों के अनुसार ही किए जाएंगे, ताकि देश का शासन सही ढंग से चल सके।

गपलू ने कहा– ''काका! हमें देश के संविधान से क्या लेना–देना? हम जंगल के जानवर हैं। यहाँ प्रकृति के नियम चलेंगे। हम अपनी मर्जी से उठते हैं, मर्जी से खेलते–कूदते और खाते हैं और मर्जी से जहाँ जगह मिले वहाँ सो जाते हैं। हमें गणतंत्र दिवस और परेड वगैरह में न फंसाओ।''

गपलू की ऐसी लापरवाही भरी बातों से दीनू काका को बड़ा गुस्सा आया। किन्तु वे चुप रहे। वे वहाँ से चले गए। इससे गपलू और उसके भाइयों का मन और बढ़ गया। वे पेड़ की डालियों पर कुछ अधिक ही उछल–कूद मचाने लगे। इससे कई छोटी–बड़ी डालियाँ टूटकर नीचे

आ गिरीं। उन पर फल लगे थे। वे भी नीचे गिरकर नष्ट हो गए।

तभी राजा शेर सिंह के सैनिक वहाँ आ पहुँचे। वे सभी हाथी थे। पेड़ का ऐसा नुकसान देख उन्हें गुस्सा आ गया। उन्होंने चारों बंदर को अपनी सूंड में लपेट लिया। सबसे बड़े हाथी ने कहा– ''चलो, राजा शेर सिंह के पास, वहीं पर तुम चारों का निदान होगा।''

गपलू चीखने लगा। उसने पूछा– ''शेर सिंह राजा कब से हो गया? हमने तो उसे राजा नहीं बनाया। वह हमारे काम में व्यवधान नहीं दे सकता। हमें छोड़ो, नहीं तो हम जंगल के सारे पेड़ ऐसे ही नष्ट कर डालेंगे।''

बड़े हाथी ने कहा– ''जंगल का अपना नियम है। तुम प्राकृतिक चीजों को अपनी इच्छा से ऐसे नष्ट नहीं कर सकते। तुम सभी को दण्ड मिलेगा।''

गपलू ने कहा– ''हद है। कोई संविधान की बात करता है तो कोई नियम की। यह क्या झमेला है?''

''झमेला? तुम नियम और व्यवस्था को झमेला कहते हो? चलो, तुम्हें अभी सब पता चल जाएगा।'' बड़े हाथी ने कहा।

थोड़ी ही देर में चारों बंदर को शेरसिंह के दरबार में उपस्थित किया गया। गपलू और उसके भाइयों ने देखा, शेर सिंह की मांद के बाहर गणतंत्र दिवस के परेड का अभ्यास हो रहा था। सभी जानवर एक पंक्ति में पैर से पैर मिलाकर परेड कर रहे थे। कुछ दूर आगे एक ऊँचे पोल पर तिरंगा लहरा रहा था। उसके पास पहुँचते ही सभी जानवरों ने एक लय में झंडे की मानवंदना की। फिर सभी सावधान की मुद्रा में आ गए। राष्ट्रीय धुन बजने लगी।

यह सब चारों बंदरों को बड़ा अच्छा लगा। राष्ट्रीय धुन के बजने पर हाथियों ने अपनी सूँड की पकड़ ढीली कर दी थी। बंदरों को छूटने का अवसर मिल गया। वे छूट गए और छूटते ही दौड़कर कतार में खड़े हो गए। वे भी राष्ट्रीय धुन में सुर मिलाने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु उन्हें राष्ट्रीय गान आता कहाँ था। उन्होंने राष्ट्रीय गान बहुत बेसुरा गया।

थोड़ी देर में राष्ट्रीय धुन समाप्त हुई। सभी जानवर आरम की मुद्रा में आ गए।

राजा शेरसिंह वहीं खड़ा था। हाथियों ने शेरसिंह को बंदरों की उद्दण्डता के बारे में बताया। इस पर शेरसिंह बड़ा नाराज हुआ। उसने गपलू और उसके भाइयों से कहा– ''तुम्हें अपनी करनी का फल अवश्य मिलेगा। किन्तु तुम लोगों की शिक्षा यह होगी कि तुम्हें रात भर में राष्ट्रीय गान ठीक से याद करना होगा। आज ही परेड का चार चार घंटे तक अभ्यास भी करना होगा और हाँ, कल गणतंत्र दिवस के अवसर पर तुम्हें भारतीय गणतंत्र पर दस मिनट का भाषण भी देना होगा।''

यह सुन चारों बंदरों की सिट्टी–पिट्टी गुम होने लगी। उनके चेहरे पर पसीना आने लगा। शेरसिंह ने कहा– ''घबराओ मत। मेरा सियार मंत्री इन कामों में तुम्हारी सहायता करेगा।'' मरता क्या न करता। चारों बंदर इन कामों में उसी समय लग गए। वे लगातार मेहनत करते रहे। रात भर में उनका प्रयास रंग लाया। अगले दिन गणतंत्र दिवस पर तिरंगा फहराने, परेड करने और झाँकियाँ निकालने का बड़ा आयोजन हुआ। गपलू बंदर ने इस अवसर पर अच्छे भाषण से प्रारंभ किया। अन्य बंदरों ने भी गणतंत्र दिवस का महत्व समझाया।

शेरसिंह ने तिरंगा फहराया। फिर राष्ट्रीय गान गाया गया। सभी जानवरों के साथ गपलू और उसके भाइयों ने भी सुर में सुर मिलाकर अच्छे से राष्ट्रीय गान गाया। बाद में उन्होंने परेड में भी भाग लिया और कदम से कदम मिलाकर पथ संचलन किया। चारों ओर खूब तालियाँ बजीं। दीनू काका भी वहीं थे। वे गपलू और बंदरों में रातोंरात आए बदलाव को देख बहुत प्रसन्न व चकित थे।

कार्यक्रम के अंत में मिठाई बंटी। सभी जानवरों ने लड्डुओं का भरपूर आनंद लिया। गपलू और उसके भाइयों ने भी लड्डुओं का आनन्द लिया और भविष्य में हमेशा नियम से चलने की शपथ ली। अगले दिन से वे शाला भी जाने लगे।

– पटना (बिहार)

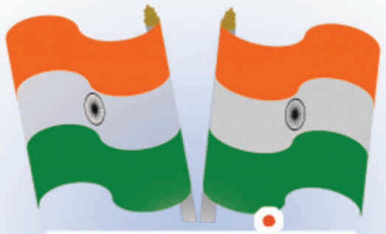

गणतंत्र दिवस

चित्रकथा: देवांशु वत्स

तिरंगे की कहानी

– रवि अतरोलिया

मैं आपका अपना राष्ट्रध्वज बोल रहा हूँ। मेरे बारे में आपको सम्पूर्ण जानकारी नहीं दी गई? क्यों नहीं दी गई? कौन जिम्मेदार है? यह प्रश्न आज औचित्यहीन है। अत: अपने बारे में आप सभी को बताने के लिए अब मैं स्वयं आपके सामने आया हूँ। गुलामी की काल स्याह रात के अंतिम प्रहर जब स्वतंत्रता के सूर्य के निकलने का संकेत प्रभात बेला ने दिया, उस दिन २२ जुलाई १९४७ को भारत की संविधान सभा कक्ष में पं. जवाहरलाल नेहरू ने मुझे विश्व एवं भारत के नागरिकों के सामने प्रस्तुत किया, यह मेरा जन्म पल था। मुझे भारत का राष्ट्रध्वज स्वीकार कर सम्मान दिया। इस अवसर पर पं. नेहरू ने बड़ा मार्मिक हृदयस्पर्शी भाषण भी दिया तथा माननीय सदस्यों के समक्ष मेरे दो स्वरूप, एक रेशमी खादी व दूसरा सूती खादी से बना ध्वज प्रस्तुत किया। सभी ने करतल ध्वनि के साथ मुझे स्वतंत्र भारत के राष्ट्रध्वज के रूप में स्वीकार किया।

आजादी के दीवानों के बलिदान व त्याग की लालिमा मेरी रगों में बसी है, इन्हीं दीवानों के कारण मेरा जन्म संभव हुआ। १४ अगस्त १९४७ की रात १०.४५ पर काउंसिल हाऊस के सेन्ट्रल हाल में श्रीमती सुचेता कृपलानी के नेतृत्व में **वंदे मातरम्** के गायन से कार्यक्रम शुरु हुआ। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व पं. जवाहरलाल नेहरु के भाषण हुए, इसके पश्चात् श्रीमती हंसाबेन मेहता द्वारा अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद को मेरा सिल्क वाला स्वरूप सौंपा गया और श्रीमती हंसाबेन मेहता ने कहा कि– ''आजाद भारत में पहला राष्ट्रध्वज जो इस सदन में फहराया जायेगा, वह भारतीय महिलाओं की ओर से इस राष्ट्र को एक उपहार है।'' सभी लोगों के समक्ष मेरा यह पहला प्रदर्शन था। **'सारे जहाँ से अच्छा व जन–गण–मन'** के सामूहिक गान के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ।

२३ जून १९४७ तो मुझे आकार देने के लिए एक अस्थाई समिति का गठन हुआ था, जिसके अध्यक्ष थे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा समिति में उनके साथ थे– अब्दुलकलाम आजाद, श्री के. एम. पाणीकर, श्रीमती सरोजिनी नायडु, श्री के. एम. मुंशी, श्री राजगोपालाचारी और डॉ. बी. आर. अंबेडकर। विस्तृत विचार विमर्श के बाद मेरे बारे में निर्णय लिया गया और संविधान सभा में स्वीकृति प्राप्ति हेतु पं. जवाहरलाल नेहरू को अधिकृत किया, जिन्होंने २२ जुलाई १९४७ को सभी की स्वीकृति प्राप्त की और मेरा जन्म हुआ।

पं. नेहरू ने जो मेरे मानक बताये जिन्हें आपको जानना आवश्यक है (जिसका उल्लेख भारतीय मानक संस्थान के क्रमांक आई. एस. आई.–१–१९५१, संशोधन १९६८ में किया गया।) उन्होंने कहा भारत का राष्ट्रध्वज समतल तिरंगा होगा, यह आयाताकार होकर इसकी लंबाई–चौड़ाई का अनुपात २:३ होगा, तीन समान रंगों की आड़ी पट्टिका होगी। सबसे ऊपर केशरिया, मध्य में सफेद तथा नीचे हरे रंग की पट्टी होगी, सफेद रंग की पट्टी पर मध्य में सारनाथ स्थित अशोक स्तंभ का चौबीस शलाकाओं वाला चक्र होगा, जिसका व्यास सफेद रंग की पट्टी की चौड़ाई के बराबर होगा।

मेरे (राष्ट्रध्वज) निर्माण में जो वस्त्र उपयोग में लाया जाएगा, वह खादी का होगा तथा यह सूती, ऊनी या रेशमी भी हो सकता है, लेकिन शर्त यह होगी कि राष्ट्रध्वज का सूत हाथ से काता जायेगा एवं हाथ से बुना जायेगा।

इसमें हथकरघा सम्मिलित है। सिलाई के लिए खादी के धागों का ही प्रयोग होगा। आपको बताऊँ मेरे कपड़े का निर्माण स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के एक समूह द्वारा पूरे देश में एकमात्र उत्तरी कर्नाटक जिला धारावाड़ के गरग नाम गाँव जो बैंगलुरू-पूना रोड़ पर स्थित है, किया जाता है इसकी स्थापना १९५४ में हुई। नियमानुसार मेरे (राष्ट्रध्वज) खादी के एक वर्ग फीट कपड़े का वजन २०५ ग्राम होना चाहिये। हाथ से बनी खादी, जिसका प्रयोग मेरे (राष्ट्रध्वज) निर्माण के लिये होता है, वह यही केन्द्र है। परन्तु अब राष्ट्र ध्वजों का निर्माण क्रमशः अर्डीनेंश क्योरिंग फेक्ट्री, शाहजहाँपुर, खादी ग्रामोद्योग आयोग मुम्बई एवं खादी ग्रामोद्योग, दिल्ली में होने लगा है, तथा निजी निर्माताओं द्वारा भी राष्ट्र ध्वज निर्माण पर कोई प्रतिबंध नहीं है, लेकिन राष्ट्रध्वज के गौरव व गरिमा को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक है, कि केवल आई.एस.आई. (भारतीय मानक संस्थान) की मुहर लगी हो।

मेरे (राष्ट्रध्वज के) रंगों का अर्थ स्पष्ट किया कि- ''केसरिया रंग साहस और बलिदान का, सफेद रंग सत्य और शांति का तथा हरा रंग श्रद्धा व समृद्धि का प्रतीक होगा तथा चौबीस शलाकाओं वाला नीला चक्र २४ घंटे सतत प्रगति तथा प्रगति भी ऐसी कि नीला अनन्त विशाल आकाश एवं नीला अथाह गहरा सागर।''

आपको लगता है कि आप भी अपने घरों व दुकानों पर राष्ट्रध्वज वर्षभर फहराए, लेकिन जब तक मेरे मान-सम्मान सहित फहराने का ज्ञान प्रत्येक नागरिक को न हो जाए, तब तक आपको यह छूट कैसे दी जाए? अब आपको वैधानिक रूप से ३६५ दिन (वर्षभर) ससम्मान ध्वजारोहण का अधिकार फरवरी २००२ से प्राप्त हो गया है। वर्ष भर न सही आप निम्न तिथियों पर मेरा ध्वजारोहण सूर्योदय के समय करके, सूर्यास्त के समय ससम्मान उतार सकते हैं, किन्तु मोटर-कारों पर साधारण नागरिक को राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर प्रतिबंध है।

-

मेरे प्यारे भारतवासियो!

आपको ऐसी बात बताने जा रहा हूँ, जिससे मैं तो व्यथित हूँ ही, आपके लिये भी यह बात हृदयघाती होगी। आपको मैंने बताया था कि २२ जुलाई १९४७ को पं. जवाहरलाल नेहरू ने संविधान सभा में मेरे दो स्वरूप क्रमशः सूती खादी एवं सिल्क को लेकर गये थे तथा मुझे अंगीकार किया था। १४ अगस्त १९४७ को रात्रि में श्रीमती हंसाबेन मेहता ने मुझे फहराने हेतु तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को सौंपा था और वही सिल्क का ध्वज १६ अगस्त १९४७ को सुबह ८.३० बजे लाल किले से भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा ध्वजारोहण किया गया था।

इस मायने से मेरा वह स्वरूप ऐतिहासिक बन गया था, जिससे हर भारतवासी स्मरण स्वरूप बार-बार देखने की कामना रखते होंगे, किन्तु दुःख की बात है कि तत्कालीन लोगों द्वारा मेरे स्वरूप को कहीं रखकर भुला दिया गया और स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि मेरा वह स्वरूप (ऐतिहासिक राष्ट्रध्वज) कहाँ है? किसी को पता नहीं और न ही मुझे खोजने में तत्परता या रुचि दिखाई जा रही है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि १६ अगस्त १९४७ को लाल किले से फहराए राष्ट्रध्वज को खोजें।

- आप सभी का स्वाभिमान
प्यारा तिरंगा-राष्ट्रध्वज

देश हमारा

– प्रो. शरद नारायण खरे

चारों ओर उजाला बिखरा,
जगमग सारा देश हमारा।
खूब चमकता और दमकता,
प्रखर सितारा देश हमारा।।

जिसकी माटी में सोना है,
सबसे प्यारा देश हमारा।
अंधकार सब दूर हो गया,
अति उजियारा देश हमारा।।

सदा प्रगति के पथ का राही,
गंगा–धारा देश हमारा।
सतरंगी आभा है इसकी,
सबसे न्यारा देश हमारा।।

दीन, दुखी, शोषित–पीड़ित का,
बना सहारा देश हमारा।
धर्म, सत्य और नीति–रीति का,
घर है सारा देश हमारा।।

– मंडला (म. प्र.)

मेरा देश

– मदन देवड़ा

मेरा देश, मुझे है प्यारा। है मेरी आँखों का तारा।
शक्तिहीन जो इसे समझकर
लड़ने का अभियान रचेगा,
सच कहता हूँ, नहीं विश्व में
उसका नाम–निशान बचेगा।
यही रहा है मेरा नारा। मेरा देश, मुझे है प्यारा।

वैसे मैं अपने नियमों से
सदा 'सत्य' का रहा पुजारी,
मैंने कभी न व्यर्थ किसी से,
छल करने की बात बिचारी।
यही जानता है जग सारा। मेरा देश मुझे है प्यारा।

– तराना (म. प्र.)

भारत देश

– चन्द्रकुमार डड़सेना

हिमालय की गोद से,
हिन्द की लहरों तक,
अविरल होती आरती,
यही हमारी जन्मभूमि,
वंदनीय माँ भारती।

देव जहाँ पर जन्म लिए,
कण–कण में ज्ञान भक्ति दिए,
मानवता की रक्षा हेतु,
दानव को संहारती, यही हमारी ....

जिसके गोद में बैठ मनीषी,
वेद पुराण उपनिषद रचे,
रामायण महाभारत का,
वह मंत्र सबको तारती, यही हमारी........

ऐसे ममता निर्मल पावन,
हृदय विशाल स्नेह जग भावन,
श्रद्धा से नत मस्तक हो,
जनजन माँ पुकारती, यही हमारी ......

– रायपुर (छ. ग.)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'देश' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

....
....
....
....

राष्ट्रीय एकता की भाषा

यह हिंदी ही है श्रीमान! जिसमें तोते भी राम-राम बोलते हैं।
वर्ना बाकी जुबां में तो, लोग अपने अपनों को तोलते हैं।।
वह हिंदी ही है जो सबको, एक डोर में बांधती है।
बिखरी-बिखरी हर भाषा बोली को अपनी सगी बहन मानती है।।
यह हिंदी ही है श्रीमान, जो ऊँच-नीच नहीं मानती।
यह अपने अक्षरों को स्माल और कैपिटल में नहीं जानती।।
हुआ तो और अपने हर आधे अक्षर को सहारा देने।
उसे हमेशा पूरे अक्षर के साथ बांधती।।
सूर तुलसी और कबीर, सभी ने रचा इसमें जीवन का नीर।
इस नीर का मंथन कर, हम हर सकते हैं सभी की पीर।।
विविधता में एकता का पाठ हमें यह पढ़ाती है।
पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधकर दिखलाती है।।
इसमें भरा है पास-पड़ोस और दूरदराज भी।
संस्कृत अरबी बांग्ला तमिल और आम आदमी की आवाज भी।।

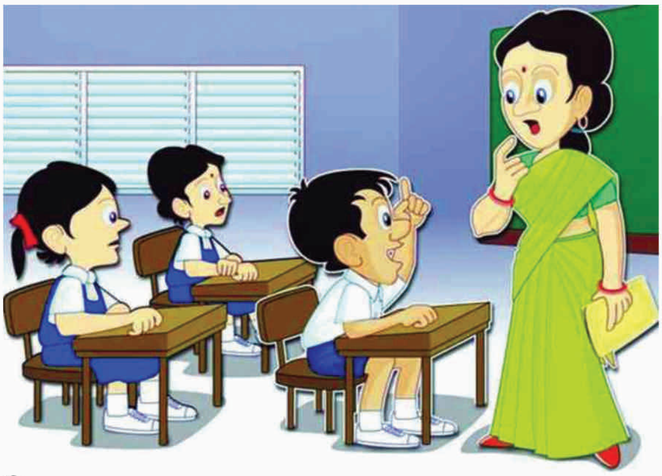

– आद्या भारती
– भोपाल (म. प्र.)

उलझ गए! 22

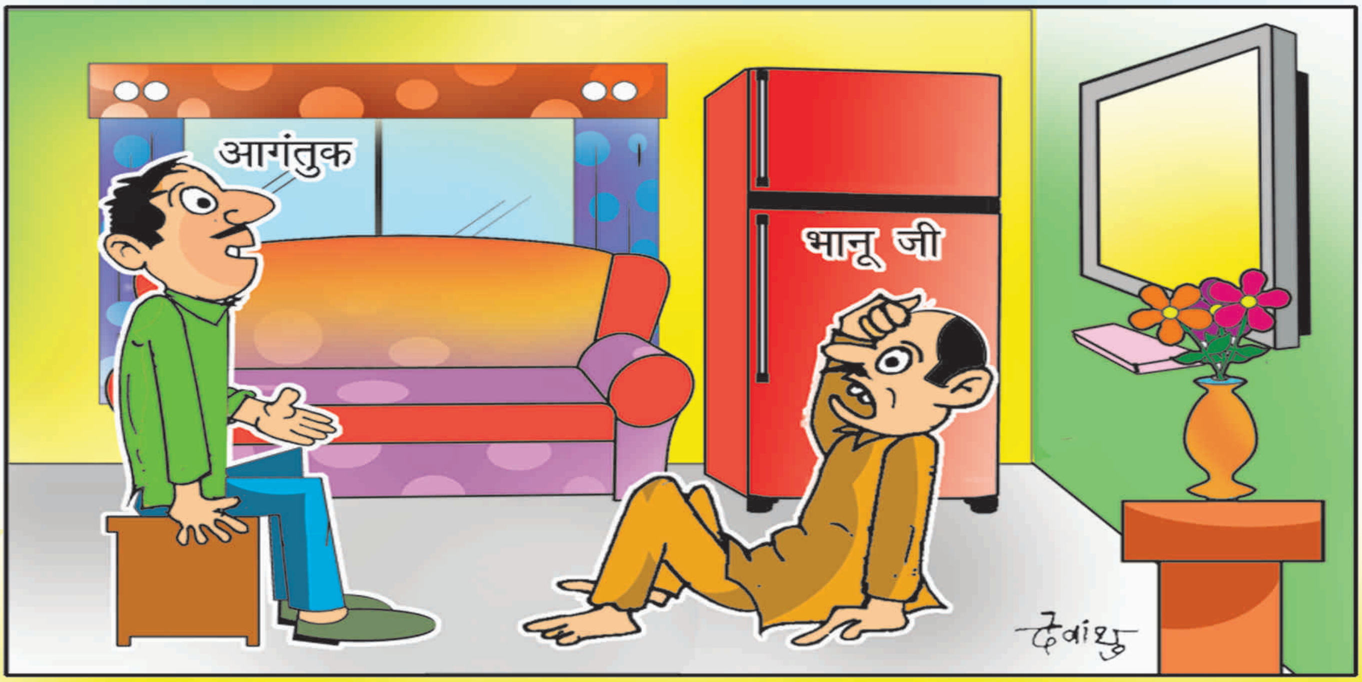

आगंतुक ने भानू जी से बताया-'मैं आपकी सासू मां के पोते की बुआ की भतीजी के दादा का पुत्र हूं।' आगंतुक भानू जी का रिश्ते में क्या लगता है?

उत्तर: आगंतुक रिश्ते में भानू जी का साला लगता है।

योगदान

– अनुज पांडेय

रामदरश मिश्र अपने समय में वरिष्ठ कवियों कथाकारों में से एक थे। वर्षों पहले उनके साथ एक दुखद घटना हुई, जिसमें वह अपना एक पैर गंवा बैठे थे। कलम ही उनकी शक्ति थी, कलम ही उनकी रोटी पाने की साधन थी। लेखन को वे अपना परम कर्त्तव्य मानते थे। उस समय राजाओं का राज हुआ करता था।

एक बार विदेशियों को आक्रमण हुआ। राज्य छोटा था और नागरिक भी कम थे। युद्ध में योद्धाओं की कमी ना हो, इसके लिए राज्य की लगभग पूरी प्रजा ने युद्ध में भाग लिया। भीषण युद्ध हुआ दोनों पक्षों में लाखों सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। सभी ने विजय के लिए अपनी पूरी ताकत, शक्ति झोंक दी। कोई विधवा हुआ, कोई अनाथ, तो कोई वंशहीन।

इधर रामदरश मिश्र अपनी विकलांगता के कारण युद्ध में भाग लेने में असमर्थ थे। इस भीषण युद्ध में आक्रमणकारियों की हार हुई और राज्य विजयी बना। युद्ध के कुछ ही दिनों बाद कवि रामदरश मिश्र ने बीते युद्ध पर एक महाकाव्य की रचना कर डाली। इस महाकाव्य में शहीद हुए योद्धाओं की प्रशस्ति की गई थी।

भावी पीढ़ियाँ इस युद्ध और महान योद्धाओं की शौर्यगाथा को पढ़ और जान सकें, इसलिए उन्होंने इस महाकाव्य की रचना की। वे युद्ध में भाग ले पाने में असमर्थ थे, किन्तु उन्होंने अपना यथा संभव योगदान किया।

देश हेतु हम अपना यथा संभव योगदान दें और कर्तव्यों को निभाएँ, जीवन में यह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

– गोरखपुर (उ. प्र.)

करे मन बल्ले बल्ले

– महेंद्र कुमार वर्मा

रसगुल्ले को देख के, जागे मन में जोश,
और जलेबी देख के, खुश होता संतोष,
खुश होता संतोष, समोसे भी मन चाहे,
हो चटनी चिरपिरी, सभी मन खूब सराहे,
कहें धीर कविराय, करे मन बल्ले बल्ले,
मिलते जाएँ रोज, रसीले गर रसगुल्ले।

– पुणे (महाराष्ट्र)

आवाज, कंपन और संवेदी अंग

सचित्र विज्ञान चर्चा- **संकेत गोस्वामी**

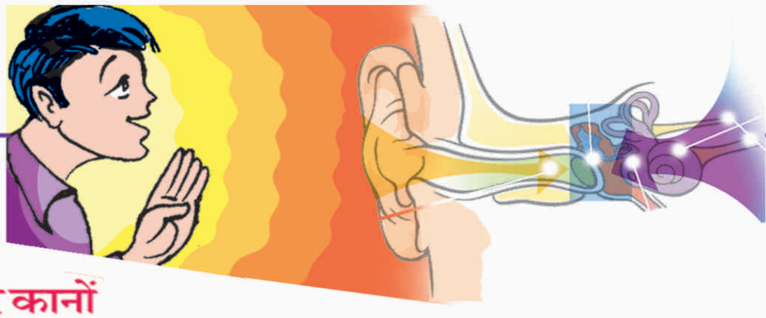

विज्ञान की भाषा में
आवाज वह हलचल है जो हमारे कानों में संवेदना पैदा करती है। आवाज भी ऊर्जा का एक रूप है। जब कोई वस्तु कंपन करती है तो उससे ध्वनि तरंगें पैदा होती हैं। ये तरंगें जब हमारे कानों में पहुंचती हैं तब हमें आवाज सुनाई देती है।

आवाज या ध्वनि असल में हवा का कंपन है और स्तनपायी जीवों में कान आवाजों को सुनने का अंग है.

विश्वास शायद ना हो पर कानों के कारण ही इंसान अपना शारीरिक संतुलन बनाए रख पाते हैं.

लेकिन मछलियों के कान नहीं होते वे कंपनों को अपने संवेदी अंगों से पहचानती हैं...

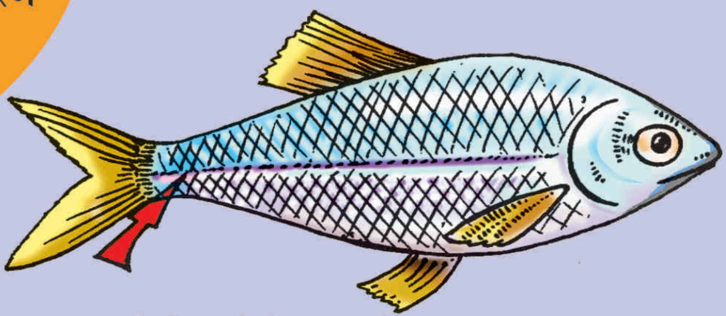

मछली के संवेदी अंग
उनके शरीर के बीच एक रेखा की तरह होते हैं.

पौधों की बात करें तो वे हमेशा गुरुत्वाकर्षण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं.
चाहे आप बीज को कैसे ही रोप दें, वे सही दिशा में ही बढ़ेंगे.

कुछ जन्तु बड़े कान वाले होते हैं, जैसे चमगादड़ और खरगोश. जो आवाजों और ध्वनियों के प्रति बेहद संवेदी होते हैं. चमगादड़ तो केवल रात को ही बाहर आते हैं जब प्रकाश तो नहीं के बराबर होता है किन्तु वे ध्वनि के परावर्तन से शिकार भी करते हैं और स्वयं का बचाव भी. साथ ही इस विचित्र संवेदी क्षमता के बल पर बिना बाधा के विचरण करते हैं.

मच्छर अपने पंख एक सैकिंड में 250 से 600 बार हिला सकते हैं। पंखों के कम्पन से पैदा यह आवाज ही उनकी भिनभिनाहट है। वातावरण में गरमी हो तो मच्छर अधिक सक्रिय हो जाते हैं और पंखों का कम्पन तेज होता है। यही वजह है कि सर्दियों के मुकाबले गर्मियों में मच्छर की भिनभिनाहट अधिक साफ सुनाई देती है। मच्छर अपने शरीर के बीच की मांस पेशियों की सहायता से पंख हिलाते हैं।

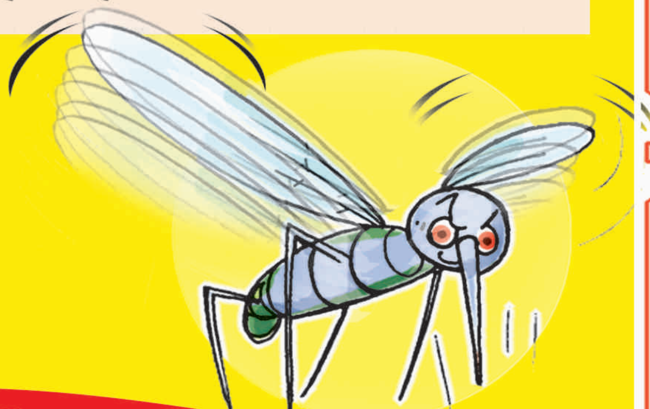

गुलमुच्छों भरे या झबरीले जीव भी कंपनों के प्रति बड़े संवेदी होते हैं जैसे चूहे.

समाप्त

दरिद्रनारायण की सेवा

– मदनगोपाल सिंघल

घर के दरवाजे पर खड़ा एक भिखारी भिक्षा मांग रहा था और उसके साथ ही एक नंग धड़ंग बच्चा था जो जाड़े में ठिठुर रहा था। गृह–लक्ष्मी भिखारी और उसके बच्चे को भिक्षा देने आयी इससे पूर्व ही उसका सात–आठ वर्ष का बालक द्वार पर जा खड़ा हुआ।

''तुम्हे जाड़ा लग रहा है भैया?'' बालक ने भिखारी के बच्चे से पूछा।

''हाँ'' उसने उत्तर दिया।

''तो तुम कपड़ा क्यों नहीं पहनते?'' बालक ने जिज्ञासा भरी वाणी में प्रश्न किया।

''मुझ पर कपड़ा नहीं है। होता तो पहन लेता।'' भिखारी के बच्चे ने उत्तर दिया।

''तुम पर कपड़े नहीं हैं?'' कहते–कहते बालक के नेत्रों में आँसू झलक आये। ''तो लो, तुम यह कपड़ा पहन लो, मेरे पास तो और भी बहुतेरे कपड़े हैं।'' और कहते–कहते गृहस्वामी के उस नन्हें से बालक ने सचमुच ही अपने शरीर का मूल्यवान वस्त्र उतार कर उस भिखारी के बालक को दे दिया।

बालक की माता दूर से ही यह दृश्य देख रही थी। वह गद्गद हो उठी। उसने दौड़ कर अपने बच्चे को गोदी में उठा लिया।

''इस बच्चे पर एक भी कपड़ा नहीं था माँ! वह जाड़े में ठिठुर रहा था।'' उसने कहा।

''कोई बात नहीं है बेटा! मैं तुझे दूसरा कपड़ा दे दूँगी।'' माँ ने बालक को प्रेमपूर्वक छाती से लगाते हुए कहा।

जानते हो इस बच्चे का नाम? इसका नाम था वीरेश्वर, विद्यालय में इसका नाम हुआ नरेन्द्र और संसार ने उसे जाना स्वामी विवेकानन्द के नाम से।

–

मोबाइल खेलों का शिकंजा

– डॉ. फकीरचंद शुक्ला

आज शाला में आर्यन को काफी गृहकार्य मिला था। आज तो का निपटाते हुए ही आधी रात हो जाएगी। समझ में नहीं आता कभी–कभी अध्यापकों को क्या हो जाता है। एक बार में ही इतना गृहकार्य दे देते हैं कि विद्यार्थी का कचूमर निकल जाता है। इस तरह सोचता हुआ वह घर की ओर चला जा रहा था।

जब घर पहुँचा तो देखा कि उनकी बैठक तो मेहमानों से भरी हुई थी। उसके चाचा–चाची तथा उनके बच्चे आए हुए थे।

''अरे आप कब आए?'' आर्यन ने आगे बढ़कर उनके चरण स्पर्श करते हुए कहा। ''अरे भाई! हम सब तो अमृतसर में किसी मित्र के यहाँ शादी में गए थे। हमने सोचा इतनी दूर से कहाँ रोज–रोज आया जाता है, इसलिए तुम लोगों से मिलने का भी कार्यक्रम बना डाला।''

''यह तो बहुत अच्छा किया आपने। मेरा भी आपसे मिलने को बहुत मन करता था। कुछ दिन यहाँ रहोगे तो आप सबके साथ बहुत आनंद आएगा।'' आर्यन चहक कर बोला।

''अरे कुछ दिन कहा भाई! इतनी छुट्टी कौन देगा हमें। हम तो शाम की गाड़ी से वापस जा रहे हैं। नौ बजे वाली ट्रेन में आरक्षण है।'' चाचाजी ने बताया तो आर्यन के चेहरे की रंगत फीकी पड़ गई थी।

''यह तो कोई बात नहीं हुई चाचाजी!''

''क्या करें भाई! कार्यालय में काफी काम है। जाना ही पड़ेगा। हाँ, जब ग्रीष्मावकाश होगा तब आएंगे या तुम हमारे पास चले आना।'' चाचाजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

....और आर्यन शीघ्र ही चाचाजी के बच्चों के साथ खेलने में व्यस्त हो गया था।

रात को साढ़े नौ बजे के लगभग वे चाचाजी को रेलवे स्टेशन पर छोड़कर आए थे। उसके पश्चात ही आर्यन ने पढ़ाई शुरू की थी। आज का गृहकार्य तो उसे पहाड़ से कम नहीं लग रहा था। कैसे पूरा कर पाएगा वह! वह इसी उधेड़बुन में उलझा हुआ था कि उसके मित्र कबीर का फोन आ गया।

''क्या कर रहा है, गृहकार्य कर लिया क्या?''

''अरे अभी कहाँ... अभी तो शुरू किया है।''

''इतनी देर क्या करता रहा?''

''बैंगलुरु से चाचा–चाची जी आए थे। उनको ट्रेन

चढ़ाकर थोड़ी देर पहले ही घर लौटे हैं... समझ में नहीं आ रहा कैसे पूरा कर पाऊँगा।''

''अरे! इतनी चिंता क्यों करता है। बीच-बीच में प्रश्न छोड़कर कर ले। शिक्षक को कौन-सा एक-एक प्रश्न जांचना होता है। वह तो गृहकार्य वाले अंतिम पृष्ठ पर टिक मारकर हस्ताक्षर कर देते हैं।''

''यह तो बढ़िया सुझाव है। पहले क्यों नहीं बताया। मैं भी ऐसे ही करता हूँ।''

''जल्दी-जल्दी कर ले मैं तो कब से तेरे फोन की प्रतीक्षा कर रहा था।''

..... और आर्यन ने एकाध घंटे में ही गृहकार्य कर लिया था।

फिर उसने धीरे-धीरे दूसरे कमरे की ओर जाकर देखा। उसके माता-पिता गहरी नींद में सोए हुए थे। यह उसके लिए सुनहरा अवसर था। उसने झट से अपना मोबाइल ईयर फोन की तार से जोड़कर कानों में लगा लिया था। दूसरी ओर से कबीर भी जुड़ गया था। तथा दोनों गेम खेलने लगे थे।

गेम खेलते हुए आर्यन को पता ही नहीं चला कि कब आधे से अधिक रात बीत चुकी थी। थका मांदा वह कुर्सी पर ही सो गया था।

प्रात: जब उसकी आँख खुली तो उससे उठा भी नहीं जा रहा था। उसकी आँखें नींद से भरी हुई थी। लेकिन आज कोई पहली बार उसके साथ ऐसा नहीं हुआ था। ऐसा तो लगभग प्रतिदिन उसके साथ होता था। दिन भर आलस्य उस पर हावी रहता था।

एक दो बार पिताजी ने उसकी चढ़ी हुई आँखें देखकर टोक भी दिया था- ''इतनी रात गए क्यों पढ़ता रहता है। समय पर सो जाया कर। प्रात: जल्दी उठकर पढ़ना चाहिए। और तुम्हारी मोबाइल की लत तो किसी नशे से कम नहीं। जब देखो मोबाइल से चिपका रहता है।''

पिताजी- ''छमाही परीक्षा निकट आ रही है। इसलिए देर रात तक पढ़ता रहता हूँ। और मोबाइल के बिना हम क्या करें? शाला की ओर से अधिकतर गृहकार्य मोबाइल पर ही भेजा जाता है।'' आर्यन ने धीमे स्वर में कहा।

पिताजी क्या कहते चुप कर गए। वे जानते थे कि आर्यन एक मेधावी छात्र है। तिमाही परीक्षा में वह कक्षा में द्वितीय स्थान पर आया था और तभी से प्रथम स्थान पर आने की उसकी लालसा थी। इसलिए वह रात दिन कठिन परिश्रम करता होगा। उन्होंने मन ही मन सोचा था। मगर फिर भी आर्यन को स्वास्थ्य का ध्यान तो रखना ही चाहिए।

लेकिन उन्हें क्या पता था कि देर रात तक पढ़ने के पीछे कुछ और ही चक्कर चल रहा था।

पिछले माह आर्यन अपने एक सहपाठी के भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए दिल्ली गया था। हम उम्र लड़कों को पब्जी गेम खेलते हुए देख उसकी उत्सुकता भी गेम में काफी बढ़ गई थी।

इसमें कोई शक नहीं कि आर्यन पहले भी अपने मोबाइल पर प्राय: गेम्स खेला करता था। मगर पब्जी गेम ने उसे अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित किया था।... और शादी में आए हुए सभी युवक इस गेम में खोए हुए थे।

तीन दिन के दिल्ली प्रवास ने उसे पब्जी गेम

खेलना सिखा दिया था। उन युवकों ने उसे सावधान भी कर दिया था कि सभी के घर वाले उन्हें यह गेम खेलने से मना करते हैं। इसलिए देर रात तक पढ़ते रहने का बहाना बनाकर तथा माँ–बाप के सो जाने के पश्चात ही उसे गेम का आनंद उठाना चाहिए।

.....और अब तो यह हालत हो गई थी कि पब्जी गेम खेले बिना आर्यन को शायद खाना न पचता था।

रात देर तक गेम खेलते रहना उसकी दिनचर्या में सम्मिलित हो गया था। नींद से उसकी आँखें बोझिल होने लगती। लेकिन फिर भी वह खेलने से बाज ना आता था और जब तक कुर्सी पर बैठे रहना उसके लिए असहनीय ना हो जाता तब तक वह पब्जी गेम का साथ न छोड़ता।

दिन–ब–दिन पब्जी गेम की ओर उसका आकर्षण बढ़ता जा रहा था और उससे अधिक गति से वह पढ़ाई में पिछड़ा जा रहा था।

दो–तीन बार कक्षा में प्रश्न का उत्तर ठीक से ना देने के कारण शिक्षक ने भी उसे टोक दिया था– ''क्या हो गया है तुम्हें आजकल, पढ़ने की ओर ध्यान नहीं देते क्या। तुम तो एक मेधावी छात्र हो। कुछ तो अपनी प्रतिष्ठा का विचार करो।''

मगर शिक्षक की टोका–टोकी अथवा शिक्षा का आर्यन पर रत्तीभर भी प्रभाव नहीं हुआ था।

वह पढ़ाई का बहाना बनाकर अपने कमरे में चला जाता। थोड़ा बहुत गृहकार्य करने के पश्चात ही वह माता–पिता के सो जाने पर मोबाइल पर कबीर से जुड़कर पब्जी गेम खेलने लगता था।

प्रात: शाला जाते समय उससे चला भी नहीं जाता था। उसकी एकाग्रता भी बहुत कम हो गई थी। कहीं बाहर जाकर खेलने–कूदने का उसका मन नहीं करता था। उसके मन में तो बार–बार यह विचार आता रहता था कि कब दिन ढले तथा रात हो और वह अपने मित्र कबीर के साथ मोबाइल पर जुड़कर पब्जी खेलें।

.....अब तो छमाही परीक्षा आरंभ हो गई थी। परीक्षा के दिनों में भी वह अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख सका था। पाठ्यक्रम पर अधिक ध्यान देने की अपेक्षा उसका ध्यान अब भी पब्जी खेलने में लगा रहता था।

और फिर वही हुआ जो होना स्वाभाविक था। छमाही परीक्षा में वह दो विषयों में अनुत्तीर्ण हो गया था। बाकी में भी कठिनाई से उत्तीर्ण हुआ था।

उसका परिणाम देखकर पिताजी तो स्तब्ध रह गए थे– ''देर रात तक तो तू पढ़ता रहता था। पढ़ाई में इतना कमजोर तो तू कभी भी ना था। क्या हो गया है तुझे?''

''पिताजी परचों के दिनों में मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था।''

''तो फिर बताया क्यों नहीं? डॉक्टर को दिखा लाते।''

किन्तु आर्यन चुप रहा। वास्तविक कारण उसे भली प्रकार से ज्ञात था। पढ़ाई की ओर से तो उसका मन उचाट हो गया था। उसे तो हर समय पब्जी खेलने की ही धुन लगी रहती थी।

हमेशा की तरह आज भी माता–पिता के सोते ही कबीर के साथ जुड़कर मोबाइल पर पब्जी खेलने लगा था। कानों पर उसने ईयर फोन लगा लिया था ताकि आवाज बाहर सुनाई न दे। और फिर खेलते हुए उसे

अपनी सुध–बुध ना रही। ना जाने कब तक वह खेलता रहा।

तभी ना जाने कैसे उसकी सांस धौंकनी की तरह चलने लगी थी। दिल की धड़कन भी अत्यन्त तेज हो गई थी। उसका सिर भी चकराने लगा था और इससे पहले कि वह संभल पाता, वह चक्कर खाकर कुर्सी के हत्थे पर गिरकर अचेत हो गया था। उसकी गर्दन भी एक ओर लुढ़क गई थी।

आचनक ही कुछ समय पश्चात् उसके पिताजी स्नानगृह जाकर लौटे तो उसके कमरे में लाइट जलती देखकर वहाँ चले गए। आर्यन की अवस्था देखकर तो वह स्तंभित रह गए। उन्होंने दो–चार बार ऊँची उसे आवाज में उसे पुकारा। किन्तु आर्यन को सुध होती तभी कोई आवाज देता।

पिताजी ने उसे कंधे से पकड़ कर सीधा करने का प्रयत्न किया तो वह धड़ाम से नीचे धरती पर जा गिरा। अब तो पिताजी भी घबरा गए थे। उनके चेहरे पर तो हवाइयाँ उड़ने लगी थी।

उन्होंने जैसे तैसे उसे धरती पर लेटा दिया तथा उसकी माँ को जोर से पुकार कर पास बुलाया। फिर दोनों जैसे तैसे उसे कार में बैठाकर अस्पताल ले आए।

अस्पताल में डॉक्टर ने तुरंत आर्यन का उपचार प्रारम्भ कर दिया था। किन्तु अभी तक उसके हृदय की धड़कन अनियमित चल रही थी तथा उसका रक्तचाप भी बहुत बढ़ा हुआ था। खैर! धीरे–धीरे प्रभाव होने लगा था। पिताजी ने सारा वृत्तांत डॉक्टर को सुना दिया था। ''क्या यह रात को समय पर सोता नहीं?''

''डॉक्टर साहब यह तो देर रात तक मोबाइल पर पढ़ता रहता है। यह तो मेधावी छात्र है।''

''क्या आपने कभी जांचा है कि रात को यह मोबाइल पर कौन सी पढ़ाई करता है?''

पिताजी क्या उत्तर देते! उन्होंने तो कभी भी देखा नहीं था। ''शायद आप नहीं जानते आजकल के बच्चों को पब्जी गेम खेलने की बुरी लत लग गई है। रात को माँ–बाप के सो जाने पर यह लोग गेम खेलने लगते हैं।''

पिता आश्चर्यचकित हो डॉक्टर की ओर देखे जा रहे थे। ''धन्यवाद दो ईश्वर को कि समय पर आप इसे यहाँ ले आए। आपने भी समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि पब्जी गेम खेलते समय ब्रेन हेमरेज होने से कुछ बच्चों की मृत्यु हो गई थी। इसके साथ भी ऐसा हो सकता था।''

यह सुनकर पिताजी के तो हाथ पैर सुन्न हो गए थे।

''तो क्या पब्जी गेम खेलने से मृत्यु हो जाती है।'' पिताजी ने घबराते हुए पूछा।

''नहीं, पब्जी डेथ गेम नहीं बल्कि किशोर वय के बच्चे इसे खेलते समय अधिक तनाव में आ जाते हैं। गेम में अत्यधिक उत्तेजना से हॉर्ट इफेक्टिव हो जाता है। जिस कारण कई बार गेम खेलने वाले की मृत्यु भी हो जाती है।'' डॉक्टर ने बताया।

एक पल रुककर डॉक्टर ने कहा– ''अधिकतर बच्चे नींद ना पूरी होने के कारण अनिद्रा व तनाव का शिकार हो जाते हैं।''

पिताजी गुमसुन से डॉक्टर की ओर देखे जा रहे थे। ''इसलिए माँ–बाप को चाहिए कि अपने बच्चों की मोबाइल एक्टिविटी पर नजर रखें।'' डॉक्टर ने अपनी ओर से परामर्श दिया।

अस्पताल में धीरे–धीरे आर्यन के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा था। तो भी पूर्ण रूप से स्वस्थ होने के लिए उसे कई दिन अस्पताल में रहना था।

अस्पताल के बेड पर पड़ा आर्यन मन ही मन सोचने लगा था कि अगर जीवित रहना है तो उसे इस लत से छुटकारा पाना ही होगा। और यह भी निश्चित था कि अब घर वाले उसकी गतिविधियों पर अवश्य ही दृष्टि रखेंगे। ऐसी भा क्या गेम जो आपकी जान की शत्रु बन जाए तथा आपके भविष्य को बिगाड़ दे।

बार–बार उसके मन में यही विचार आ रहा था, कि स्वस्थ होने पर वह कभी भी इस प्रकार का गेम नहीं खेलेगा तथा पहले की भाँति ही पढ़ाई में मन लगाएगा।

– लुधियाना (पंजाब)

देश विशेष

कुछ देशों के वास्तविक नाम

– श्रीधर बर्वे

डेनमार्क

कुछ प्राचीन देशों से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के कारण हम उन्हें उनके मूल नाम से पहचानते हैं अन्यथा शेष विश्व को हम अंग्रेजों तथा अंग्रेजी भाषा द्वारा बतलाये गये नामों से पहचान रहे हैं। अंग्रेजों एवं अन्य योरोपीय देशों द्वारा दिये गये नामों को कुछ देशों ने बदल भी लिया है तो भी सही जानकारी तथा सही पहचान के लिए हमें मौलिकता का विस्मरण नहीं करना चाहिये।

'राष्ट्र' शब्द को सुनकर हमें उन देशों का स्मरण पहले हो आता है जो अपने राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय भावना के जीवन्त उदाहरण माने जाते हैं। योरोप का एक प्रमुख देश जिसे जर्मनी कहा जाता है, वहाँ के नागरिक अपने देश को 'डौइट्शलाण्ट' कहते हैं। उनकी भाषा 'डौइट्श' तथा निवासी 'डौइट्शे' कहलाते हैं। जर्मनी का उत्तरी पड़ौसी देश 'डेनमार्क' वहाँ के निवासियों के लिए 'डेनमार्क' और उनकी भाषा 'डान्स्क' एवं नागरिक 'डेमैन' हैं।

'स्वैरीख' नाम हमारे लिए अजीब हो सकता है– किन्तु जिसे हम स्वीडन कहते हैं, वह वास्तव में स्वैरीख ही है और वहाँ के रहने वाले हैं 'स्वैन्स्क'। इसी आधार पर जो सही रूप से 'नौरिके' है उसे हमें बतलाया गया है कि वह 'नॉर्वे' है। नौर्श्क भाषा–भाषी इस देश के निवासी 'नूर मैन' हैं। 'इटली' सचमुच में इतालिया है, मूल रूप से।

मध्य योरोप के देश ऑस्ट्रिया और हँगरी वास्तव में क्रमश: 'उइस्टर राइश' और 'माज्यर ओरसाग' हैं वहाँ के निवासियों की दृष्टि में। स्पेन के निवासी अपने देश को 'एस्पान्या' पुकारते हैं तथा उनकी भाषा 'एस्पान्यौल' है, जिसे अंग्रेजी भाषी स्पेनिश कहते हैं।

'पोप्पौल्स्की' क्या है? पोप्पौल्स्की उस भाषा का नाम है जिसे पोल्स्का देश के निवासी बोलते हैं। पोल्स्का को पोलैण्ड कहते हैं– अंग्रेजी भाषा में। बैल्जिए को हम बेल्जियम कहते हैं और रौमेनिया को रूमानिया, यह प्रभाव है अंग्रेजी का।

भूमध्य सागर में योरोप और एशिया का सेतु द्वीप है 'सायप्रस' जिसे उस द्वीप के निवासी 'किप्रियाकी' कहते हैं। ग्रीस को हमारे उप महाद्वीप में यूनान कहते हैं जबकि स्वयं यूनानी भाषा में देश का पूरा नाम है 'एलिनीकी देमोक्रेतिया' कॉकेशस पहाड़ की गोद में स्थित देश जॉर्जिया देश को सकारत वलोस के रूप में वहाँ के निवासी जानते हैं और कहते हैं। यूगोस्लाविया से अलग हुआ मेसेडोनिया मूलत: 'मकदूनिया' है।

मेसेडोनिया से भूमध्यसागर दूर नहीं है इसके दक्षिण में अफ्रीकी देश इजिप्ट है जिसे हम 'मिस्र' कहते हैं, और इसी मिस्र नाम का उपयोग वहाँ के नागरिक भी करते हैं। मिस्र के पास उत्तरी अफ्रीका का देश अल्जीरिया है जिसे 'अल जाजैरिया' वहाँ के निवासी कहते हैं।

अफ्रीका से हम एशिया की ओर बढ़ें तो भी हमें

देशों के अपने नाम और उनके अंग्रेजी नामों में अंतर दिखता है।

टर्की को तुर्कीय तथा जोर्डन को युर्दुनिया वहाँ निवासी कहते हैं।

सूर्योदय का देश जापान उस देश के निवासियों के लिये निप्पों और निप्पन है। बर्मा वासियों ने अपने देश का नाम बदलकर म्यांम्मा कर लिया है जो सही भी है।

हमारे लिए चीन का अंग्रेजों के द्वारा निर्धारित नाम चायना है जबकि स्वयं चीनीजन अपने देश को 'चुंग' अथवा 'चुंगकोआ' कहते हैं। मलयेशिया का मुख्य घटक 'मलाया' है जिसे मलयजन 'ताना मैलायु' कहते हैं।

जब पूरा एशिया उपनिवेशवाद के जाल में फंसा हुआ था तब जापान, नेपाल और थाईलैण्ड ही स्वतंत्र देश बचे थे। इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए दक्षिणपूर्वी एशिया के देश स्याम ने अपना नाम बदलकर थाईलैण्ड कर लिया था। थाई भाषा में 'थाई' शब्द का अर्थ है 'स्वतंत्र'। थाई भाषा में थाईलैण्ड को 'प्रदेश थाई' कहा जाता है।

– इन्दौर (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *अशोक वाटिका में माता सीता पर तलवार का वार करने से रावण को किसने रोका?*
- *किस कौरव महारथी ने महाभारत युद्ध में पहले दस दिनों तक भाग ही नहीं लिया?*
- *इटली के किस नगर के चौराहे पर त्रिशूलधारी शिव–शंकर जैसी एक मूर्ति लगी हुई है?*
- *देवी के शक्तिपीठों में से एक श्रीलंका में भी है, जहाँ शक्ति का नूपुर गिरा था, नाम बतायें?*
- *इस्लामी सत्ता का सफल प्रतिरोध करने वाला असम का कौन सा प्रसिद्ध राजवंश था?*
- *एक वर्ष में कितनी ऋतुएं आती हैं?*
- *किस खलीफा ने भारतीय चिकित्सकों को बगदाद बुलाकर वहाँ एक चिकित्सालय बनवाया?*
- *बंकिमचन्द्र के उपन्यास 'आनन्द मठ' का कौन सा गीत व घोष क्रांतिकारियों का मंत्र बन गया?*
- *ईरान की राजकुमारी से विवाह करने वाले मेवाड़ के राणा (रावल) कौन थे?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

घमंडी राजू

चित्रकथा: देवांशु वत्स

शिशु गीत

– विजयलक्ष्मी कोठारी

आसमान में उड़ी पतंग
कितनी लम्बी डोर।
तभी हाथ से छूट गई
पकड़ो जल्दी छोर।।

मीठा अनार मीठा आम
खट्टी इमली मीठा जाम।
खट्मीठी मौसंबी ले लो
झटपट दे दो सबके दाम।।

लौकी जैसा लम्बा
निम्बू जैसा गोल।
कद्दू जैसा मोटा
गुड्डा है अनमोल।।

सूरज आता चंदा जाता
चंदा आता सूरज जाता।
क्या दोनों में हुई लड़ाई
ना, भई खेले छुपा–छाई।।

ट्रिन ट्रिन ट्रिन ट्रिन टेलीफोन
बच्चो बताओ मैं हूँ कौन?
मोटे–मोटे पैर वाला
लम्बी सूँड है रंग काला
तुम सभी मेरे साथी हो
जोर से बोलो हाथी हो।

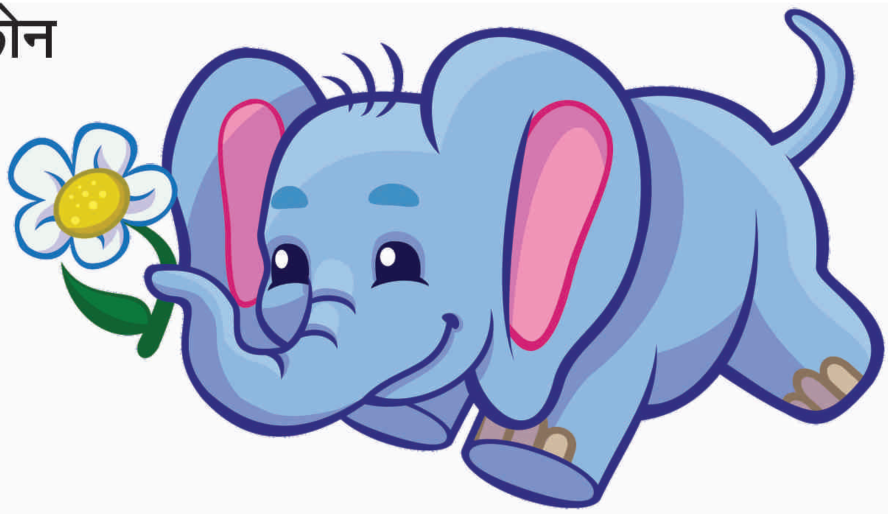

सोमवार मंगलवार
चॉकलेट पर टपकी लार
बुधवार गुरुवार
दो से दो होते हैं चार
शुक्रवार शनिवार
भर दी चाबी चल दी कार
बाद में रविवार
खुशियों का है यह त्योहार।

उत्तर तीन बताओगे?
क्या भई क्या? क्या भई क्या?
गुलाब जामुन खाओगे?
हाँ भई हाँ हाँ भई हाँ
फिर से उधम मचाओगे?
ना भई ना ना भई ना
अच्छे बच्चे कहलाओगे
वा भई वा वा भई वा।

– इन्दौर (म. प्र.)

जहाँ चाह वहाँ राह

– उषा सोमानी

अलीशा के विद्यालय से बच्चों को सेवा शिविर के लिए कुंभलगढ़ जाने का कार्यक्रम बना। कुंभलगढ़ अरावली की पहाड़ियों में स्थित हैं। इन पहाड़ियों का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है। कुंभलगढ़ में ऐतिहासिक दुर्ग भी है। सैलानियों को आकर्षित करने के लिए घुमावदार पहाड़ी रास्ते में बहुत सारे होटल और रिसोर्ट भी बने हैं।

सुबह ८ बजे सभी बच्चे शाला पहुँच चुके थे। बस में अपना–अपना सामान लगवाया। शानदार यात्रा के लिए सभी बच्चों में उत्साह था। बस के चालू होते ही बच्चे 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम्' का जयघोष कर रहे थे। बच्चों ने अंत्याक्षरी खेलना प्रारंभ कर दिया। पहाड़ी रास्ते में बस घूमती तो बच्चों को बहुत आनंद आ रहा था। पहाड़ी रास्ते में बस के चालक ने एक जगह कई बार जोर–जोर से हॉर्न बजाया और बस को एक ओर लगाकर खड़ी कर दी।

''भैया! बस यहाँ क्यों रोकी है, क्या यहाँ कोई दर्शनीय स्थल है?'' शिक्षिका शीला दीदी ने पूछा।

''अभी आपको एक अद्भुत दृश्य दिखाता हूँ। सभी बस में ही बैठे रहे।'' कहते हुए चालक काका बस से नीचे उतर गए। काका ने बस से एक थैला नीचे उतारा उसमें बहुत सारे ब्रेड के पैकेट थे। थोड़ी ही देर में वहाँ बहुत सारे बंदर आ गए। काका ने ब्रेड के पैकेट खोलकर उन्हें दी। बच्चों को बहुत आनंद आया। उन्होंने बहुत सारी फोटो खींची व बस में आकर बैठ गए।

दीदी ने पूछा– ''बंदर तो तुम्हें पहचानते हैं।'' काका ने हाँ में गर्दन हिलायी और बोले ''५ वर्ष से मैं प्रतिदिन इस मार्ग पर आता हूँ इन्हें मेरी गाड़ी के हॉर्न की पहचान है, सुनते ही दूर–दूर से भागकर आ जाते हैं।''

रिसोर्ट पहुँचकर सभी ने दोपहर का भोजन किया और निर्धारित गतिविधि के अंतर्गत आज का दिन कठपुतली के खेल का था। अलीशा की मण्डली ने संगीत और संवादों के साथ अपना खेल दिखाया। आस–पास की बस्ती के वनवासी बच्चे भी वहाँ एकत्रित हो गए और कार्यक्रम देखकर प्रसन्न हो तालियाँ बजाने लगे। दूसरे दिन सुबह मनोहर दृश्यावली देखने के बाद नृत्य और संगीत की प्रस्तुति चल रही थी। एक वनवासी बच्चा अपने हाथ में घास–फूस के बने हुए पुतले लेकर आया। पुतलों को पुराने कपड़ों से ढँक कर कठपुतली की आकृति देने का प्रयास किया गया था।

शीला दीदी ने पूछा– ''यह क्या है?'' वह वनवासी बच्चा कुछ गाकर कुछ बोलकर उन पुतलों को हाथ से नचाने लगा। उसकी भाषा अधिक समझ में नहीं आ रही थी। उसके हाव–भाव से ये समझ आ रहा था कि वह कोई लोक कथा के पात्रों को गाकर दिखाना चाहता है।

शीला दीदी ने मार्गदर्शक (गाईड) को बुलवाया और पूछा– ''यह बच्चा क्या कहना चाहता है?''

उसने बताया– ''कल आपके यहाँ जो कठपुतली का खेल हुआ था वह बहुत अच्छा लगा। यह वनवासी सैनिक बनाकर लाया है और छापामार युद्ध का दृश्य बता रहा है।''

शीला दीदी को आश्चर्य हुआ उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और पूछा– ''क्या नाम है तुम्हारा? तुम्हें यह कठपुतली का खेल सीखना है?''

बच्चे ने हाँ में गर्दन हिलायी और बोला– ''भवरिया।''

सभी बच्चे हँसने लगे। मार्गदर्शन ने बताया– ''इसका नाम भँवर होगा परन्तु इसे बुलाते इसी तरह है।''

शीला दीदी ने कहा– ''भँवरिया, तुम सुबह जल्दी आना। मैं तुम्हें कठपुतली बनाना सिखाऊँगी और ये बच्चे तुम्हें इससे कैसे काम करते हैं बताएँगे।''

शीला दीदी ने मार्गदर्शक को भी सवेरे जल्दी आने को कहा। दूसरे दिन सुबह शीला दीदी और अलीशा की टीम ने भँवरिया को कठपुतली बनाने और उसे नचाने की

तकनीक के बारे में बताया।

अचानक शोर सुनकर सभी भागकर बाहर आए। रिसोर्ट के आस-पास फैले कचरे ने सिगरेट के जले टुकड़े से आग पकड़ ली। आग की लपटें हवा से आगे बढ़ती जा रही थीं। ग्रामीण मिट्‌टी और पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास कर रहे थे। आग बुझाने में रिसोर्ट के कर्मचारी भी लगे हुए थे। आग बुझाने की इस अफरा-तफरी में भँवरिया के हाथ जल गए। शीला दीदी को भँवरिया के मासूम हाथों को जला देखकर दुःख हुआ। उन्होंने होटल के प्रबंधक से प्राथमिक चिकित्सा पेटी मंगवाई और भँवरिया को औषधि लगाकर पट्‌टी कर दी। शीला दीदी का मन अनजान अपराध बोध के बोझ से भारी हो गया। वे सोचने लगी, पर्यटक अपनी लापरवाही से कितना कूड़ा करकट फैला कर जाते हैं और प्राकृतिक अनुपम सौंदर्य को दूषित करते हैं। पर्यटकों की मौज-मस्ती की हानि इन ग्रामीण और सुंदर वादियों को चुकानी पड़ती है।

शीला दीदी ने मार्गदर्शक और रिसोर्ट के प्रबंधक से बात की और उन्हें अपना फोन नंबर दिया। उन्होंने प्रबंधक और मार्गदर्शक से भँवरिया के खेल को पर्यटक को दिखाने के लिए कहा। शीला दीदी चाहती थी भँवरिया अपनी इस कला में और निखार लाकर इसे अपना व्यवसाय बना सके।

शीला दीदी ने भँवरिया को बुलवाया- ''तुम अपना यह खेल और लोगों को भी दिखाओगे?''

''भँवरिया ने हाँ में गर्दन हिलायी।''

मैंने होटल के प्रबंधक से बात कर ली है। अब तुम अच्छे से अपने इस खेल की तैयारी करना। मैं अगले माह अपने दूसरे समूह के साथ सेवा शिविर पर आऊँगी तब मैं तुम्हारे लिए और आवश्यक सामग्री लेकर आऊँगी।

शीला दीदी बस में बैठ गई उन्होंने खिड़की से बाहर देखा भँवरिया उन्हें चोटिल हाथ से अभिवादन कर रहा था। उसकी मासूम आँखों में खुशी की चमक थी और कह रही थी जल्दी आना।

- चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

कुसंगति का फल

– शुभ प्रताप सिंह

गौरव धनपत सेठ का इकलौता पुत्र था। घर में गौरव को माँ–बाप से बहुत प्यार मिला था। उसका अधिकांश समय अपने सेब के बाग के में बीतता था। वहाँ उसके दो–चार मित्र बन गए थे। उनकी संगति में गौरव बिगड़ने लगा था। उसे चोरी करने और जुआ खेलने की आदत पड़ गई थी। एक दिन सेठ धनपत की जेब से सौ का एक नोट गायब हो गया। सेठ ने गौरव से पूछा तो उसने साफ इनकार कर दिया। दो–चार दिन बाद सेठ ने गौरव को जुआ खेलते हुए देख लिया। वहाँ तो उन्होंने गौरव से कुछ नहीं कहा पर घर आकर वे चिंता में डूब गए। गौरव के लौटने पर उन्होंने कहा– ''बेटा! जुआ खेलना अच्छी आदत नहीं है। यह तुम्हें बरबाद कर देगा।''

गौरव पर पिता की बातों का कोई असर नहीं हुआ। अंत में सेठ को एक युक्ति सूझी। एक दिन वे गौरव को लेकर सेब के बाग में पहुँचे। पेड़ों पर लाल–लाल सेब लटक रहे थे। उन्होंने माली से सेब तोड़ने के लिए कहा।

माली ने सेबों को तोड़कर एक टोकरी में रख दिया। सेठ ने गौरव से कहा– ''गौरव! सेबों की टोकरी को घर ले जाओ। पाँच दिन बात तुम्हारी बुआ आयेगी तब सेबों का आनंद लेंगे।'' गौरव ने सेबों की टोकरी को घर लाकर अलमारी में रख दिया। सेठ एक खराब सेब भी उठा लाए थे। उसे गौरव को देते हुए उन्होंने कहा– ''इसे भी उन्हीं सेबों के साथ रख दो।'' गौरव ने वैसे ही किया।

पाँच दिन बाद बुआ आ गई। सेठ धनपत ने भोजन करने के बाद गौरव से सेब लाने को कहा। गौरव ने टोकरी उठाई तो देखा कि लाल–लाल सेब सड़ चुके थे। वह बहुत हैरान हुआ। सेठ धनपत भी उसके पीछे–पीछे वहाँ आ गए थे। गौरव ने पूछा कि– ''यह कैसे हो गया पिताजी?'' सेठ ने कहा– ''बेटा! एक खराब सेब ने इन सुंदर सेबों को अपने जैसा ही बना दिया है। इसी तरह जो लड़का बुरे लड़कों की संगति करता है। वह भी बुरा बन जाता है।'' पिता की बात गौरव के दिमाग में बैठ गई। उसने बुरे लड़कों की संगति छोड़ दी।

– मझियार (म. प्र.)

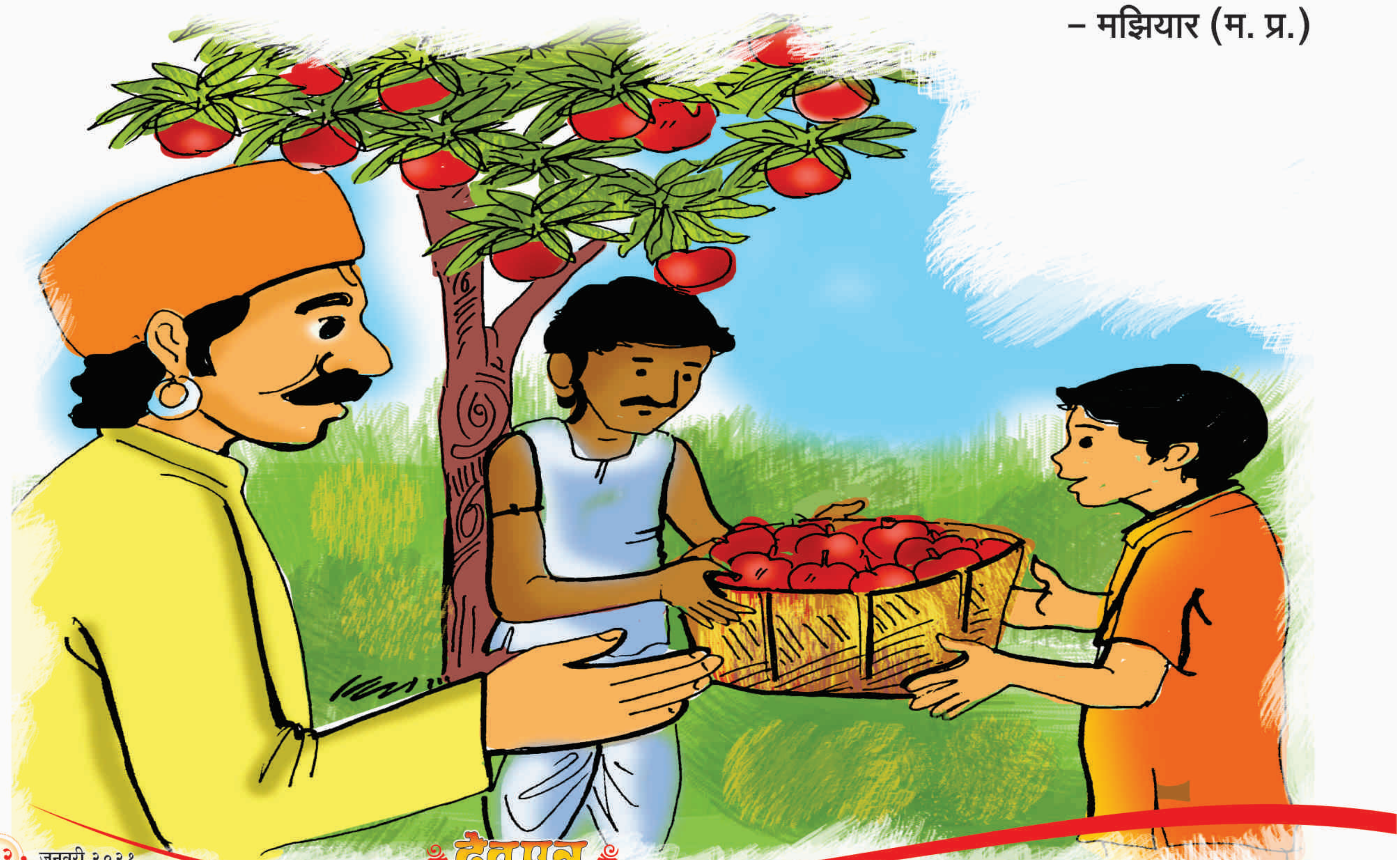

फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेखों

वे १७ जुलाई १९४३ को लुधियाना (पंजाब) के रूरका ग्राम में जन्मे तब कौन जानता था कि यह बालक एक दिन शौर्य के आकाश पर अपनी जन्मभूमि का नाम उज्ज्वल अक्षरों में अंकित करके रहेगा।

यह अवसर मिला १९७१ के भारत–पाक युद्ध के समय। तब वे श्रीनगर स्थित वायुसेना के हवाई अड्डे पर तैनात थे।

वह १४ सितम्बर की दिनाँक थी पाकिस्तान ने श्रीनगर एयर फील्ड पर छ: एफ–८६ सेबर जेट विमानों से आक्रमण कर दिया। सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्हालते हुए फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह अपने १८ स्क्वाड्रन के साथ वहाँ तैनात थे। नेट हवाई जहाजों के वे कुशल जानकार माने जाते थे। इस समय फ्लाईंग लेफ्टीनेंट घुम्मन भी पास ही थे।

वह सुबह बहुत धुंध भरी थी जब ८ बजकर २ मिनिट पर चेतावनी सूचना मिली कि दुश्मन का आक्रमण होने वाला है और ८ बजकर ४ मिनिट पर इन जाँबाज उड़ाकों के विमान आसमान में थे।

दुश्मन के पहले एफ–८६ सेबर जेट ने एयर फील्ड पर गोता मारा उसी समय फ्लाईंग लेफ्टिनेंट घुम्मन ने रनवे छोड़ा। पीछे ही निर्मलजीत सिंह का नेट उड़ा। रन वे छूटा ही था कि ठीक पीछे एक बम आकर फटा। घुम्मन उस समय एक सेबरजेट को दबोचने को लपके और निर्मलजीत सिंह आकाश में दो सेबरजेटों का सामना कर रहे थे। बम फटने से एयरबेस से इनके नेट विमानों का रेडियो संपर्क टूटा हुआ था।

धूल, धुंआ और धुंध में कुछ भी देख पाना असंभव हो रहा था फिर भी दुश्मन के दो सेबर जेट मार गिराए गए लेकिन वे भी वीरगति को प्राप्त हुए।

१४ सितम्बर १९७१ की वह तिथि शौर्य नभ में इनके नाम अंकित हुई। युद्ध आगे चला, शत्रु ने मुँह की खाई उसे अपना पूर्वी हिस्सा गँवाना पड़ा और बांग्लादेश का उदय हुआ।

निर्मलजीत सिंह सेखों को मरणोपरांत **'परमवीर चक्र'** देकर राष्ट्र ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

–

संस्कृति प्रश्नमाला के उत्तर

महारानी मन्दोदरी, कर्ण, बोलोग्ना, लंका (देवी सीताम्बा), अहोम, छ:, हारुन–उल–रशीद, वन्दे मातरम्, बाप्पा रावल।

बाँट लेंगे हम आधा–आधा

– सीमा जैन 'भारत'

यह इस चित्र में जो दोनों बन्दर पास–पास दिखाई दे रहे हैं ना, वह ऐसे नहीं थे। जिसके हाथ में केला है वह चंचल और जो ऊपर बैठा है वह कालू है। यह दोनों एक–दूसरे से बहुत लड़ते थे। या ऐसा कहें कि चंचल, कालू को बहुत परेशान करता था। क्योंकि जब वह इनके पेड़ों पर आया था तो उसने सूट पहना हुआ था। उसके सूट से चंचल को बड़ी जलन हुई थी। ''बड़ा आया साहब बन कर!'' उसने कहा था।

अब कालू भी क्या करता उसे एक सर्कस कम्पनी वालों ने छोड़ दिया था। जब से उनकी कम्पनी बंद हुई। अब तो उसने अपने कपड़े भी फेंक दिए थे फिर भी....

उनके मालिक ने अपने सभी जानवरों को अलग–अलग जगह बेच दिया था। शेर और चीते किसी दूसरे व्यक्ति के सर्कस में चले गए थे। उसके सभी साथियों को कुछ बंजारे अपने साथ ले गए थे।

उस दिन सर्कस कम्पनी का सामान इधर से उधर हो रहा था। कालू उदास सा घूम–घूम कर सब देख रहा था कि एक भारी टेबल अचानक उसके पैर पर गिर गया। उसे बहुत दर्द हुआ पर उनके मालिक को अब उसकी चिंता ही नहीं थी।

उसके लंगड़ाते हुए पैर के कारण बंजारे उसे अपने साथ नहीं ले गए। उन्होंने कहा– ''चार बंदर काफी है। ये क्या रस्सी पर चल पायेगा। हमें इसकी आवश्यकता नही है।'' कालू का दिल बहुत दुखा। उसके साथी उसे प्यार करके उससे विदा हो गए।

जब वह अकेला रह गया तो उसके मालिक ने कहा– ''कालू को यहीं छोड़ देते हैं। यहाँ कुछ बन्दर रहते हैं तो ये अकेला नहीं होगा।'' बस तब से कालू यहीं रहने लगा था। अब यहाँ के बन्दर कालू को अपने साथ रखना पसंद करे यह आवश्यक भी नहीं था।

जिस दिन से चंचल ने उसे देखा वह उससे चिढ़ने लगा। कालू जब भी कहीं कोई फल खाए तो चंचल उसके हाथ से छीन लेता। उसे धक्का दे देता। साथ में खेलने आए तो उसे अपने साथ खिलाता भी नहीं था। कालू स्वभाव से बहुत सीधा था। मार खाने पर भी कभी उसने पलटकर चंचल को मारा नहीं। वह क्या करता? वह वैसे ही अकेला था।

सर्कस कम्पनी वाले जब से उसे यहाँ छोड़कर आगे बढ़ गए थे। तब से वह इस आम के बगीचों में बंदरों के साथ रहने लगा था। इन्हें ही अपना परिवार भी समझने लगा। वह सोचता कि किसी दिन तो यह भी मुझे अपना साथी मना ही लेंगे और मुझे भी परिवार का प्यार मिल जाएगा।

अभी उसे आए अधिक दिन तो हुए नहीं थे। लगभग १५ दिन पहले ही यहाँ आया था। हाँ, कुछ बूढ़े बंदर उसे स्नेह भी करने लगे थे पर चंचल के आगे तो सब बेकार ही था।

वैसे भी उसे सर्कस में इतना डरा कर रखा जाता था कि वह सहमा–सहमा सा ही रहता था। वहाँ उसे कितना परेशान करने के बाद खाना दिया जाता था। और जैसा प्रशिक्षक कहें वैसा ना करने पर पिटाई भी होती थी।

कभी सूट पहन कर तो कभी फ्रॉक पहन कर वह नाचता या गुलपटिया खाता और लोगों को हँसाता था। वह तो उस जेल से निकलने पर ही बहुत प्रसन्न था। अब यहाँ की छोटी–मोटी परेशानियाँ उसे परेशान भी नहीं करती थीं।

जो कुछ मिलता वह खा लेता नहीं तो अपना खाना छोड़कर चुपचाप एक डाल पर बैठ जाता था। यहीं पर कुछ बूढ़े बंदर जो चंचल और कालू की सारी हरकतों को देखते थे। वह चंचल से कहते थे– ''कालू हमारे बीच आया है तो उसके साथ प्रेम से रहो। अब यहाँ यदि वह आया है तो उसे चैन से रहने दो! उसे भी तो मित्रों–साथियों की आवश्यकता है। तुम उसे अपने साथ खिलाते क्यों नहीं चंचल?''

चंचल का उत्तर होता– ''हमें यह पसंद नहीं! बाहर से आया है। हम इसे अपने साथ नहीं रखेंगे।''

फिर कुछ वृद्ध बंदरों ने कालू को अपने साथ ही रखना शुरू कर दिया। वह भी चुपचाप बैठा रहता। कभी किसी के कहने पर उसकी पीठ खुजा देता था तो कभी जुएँ साथ कर देता था।

पास में एक मंदिर था। वह उनके साथ वही चला जाता। वहाँ उन्हें कभी प्रसाद, मिठाई, मूंगफली और चने के दाने मिल जाते थे। आज भी वहाँ से बहुत सारा खाना खा कर वह सब आए थे।

अब जब चंचल ने सुना कि पास के मंदिर में बहुत खाना मिलता है तो अगले दिन वह भी अपने साथियों के साथ उस मंदिर पर गया। वहाँ बहुत लोग थे जो उनके आगे चना मूंगफली डाल रहे थे। सब वहीं खाने लगे। मगर चंचल को तो हमेशा कुछ अलग चाहिए। जो सब करें वह उसे पसंद नहीं आता है।

चंचल मंदिर के पीछे वाले बाग में चला गया। यह देखने के लिए कि वहाँ क्या है? कालू भी उसके पीछे

चला गया। एक व्यक्ति वहाँ बैठा था। अपना बड़ा सा थैला पास में रखे हुए था। उसे आगे नहीं बढ़ना है। कालू ने दाँत किट किटाकर उसे संकेत किया। चंचल ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। जैसे ही उस व्यक्ति के पास पहुँचा उसने अपने हाथ पर कुछ बिस्किट और केले निकाल कर रख दिए। उसे देखकर चंचल बहुत प्रसन्न हुआ। उस आदमी के हाथ से जैसे ही वह केला उठाने गया उस आदमी ने चंचल के ऊपर थैला डाल दिया।

जल्दी से उसकी गाँठ बाँध कर उसे कंधे पर लेकर वहाँ से चल पड़ा। थैले के अंदर चंचल हाथ पैर मार रहा था। पर उसका कोई अर्थ नहीं था चंचल को उसके साथियों के सामने से ही वह व्यक्ति उठा कर ले गया।

कालू यह सब देखकर घबरा गया। उसने अपने साथियों को यह सब बताया। वे सबके सब उस आदमी की सायकिल के पीछे भागे। सायकिल वाला व्यक्ति समझ गया कि बंदर उसके पीछे लग गए हैं तो उसने अपनी सायकिल बहुत तेजी से भगाई।

केवल कालू ही उसके साथ झाड़ियों में छुपता हुआ आगे बढ़ता गया। थोड़ी दूर जाकर उस आदमी ने एक ढाबे पर अपनी सायकिल रोकी। इतनी तेज सायकिल चलाने से वह थक गया था।

उसने थैले को थोड़ी दूर ही रख दिया ताकि उसमें से हिलता डुलता बंदर किसी को दिखाई न दे। वह जैसे ही आगे बढ़ा कालू ने उस थैले की गाँठ खोली। चंचल को बाहर निकाला और वो दोनों तेजी से वहाँ से भागे।

भागते-भागते उन्हें सामने एक बगीचा दिखा। वह दोनों उसमें ही घुस गए। उन्हें डर था कि कहीं वह आदमी फिर से न आ जाए। अंदर जाकर उन्होंने इस फिसल पट्‌टी को देखा तो उस पर बैठ गए।

चंचल के हाथ में एक केला था। जो उसे पकड़ने के लिए उस आदमी ने दिया था। चंचल ने वह केला कालू को देते हुए कहा- ''कितना बड़ा मन है तुम्हारा! मैंने तुमको कभी भी अपने साथ नहीं रखा फिर भी तुमने मुझे बचाया! आज तुम नहीं होते तो मेरे दोस्त..''

''अरे, ऐसे मत कहो! बंधन में कितनी पीड़ा होती है यह मैं जानता हूँ। फिर तुम्हें कैसे नहीं बचाता।''

''चलो अब यह केला आधा-आधा बाँट लेते हैं फिर अपने घर चलते हैं।'' कहते हुए वे दोनों गले लग गए। बच्चों यह फोटो हमें यही कहता है ना कि किसी को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। अपने मित्रों में भेदभाव नहीं होना चाहिए। इससे भी बड़ी बात हमें कालू ने सिखाई किसी के दुख में सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए।

- ग्वालियर (म. प्र.)

भारतीय स्वतन्त्रता के उपासक नेताजी सुभाषचन्द्र बसु

– बनवारीलाल ऊमर वैश्य

नेताजी सुभाषचन्द्र बसु का जन्म २३ जनवरी १८९७ में उड़ीसा के कटक नगर में हुआ था। इनके पिताश्री जानकीनाथ कोलकाता में सरकारी वकील थे। इनकी माताश्री का नाम प्रभावती था तथा गुरुदेव वेणीमाधव दास थे।

सुभाषचन्द्र बसु बाल्यावस्था से ही प्रतिभाशाली, मेधावी और कुशाग्र बुद्धि के थे। ये विनम्र, सभ्य और दयालु थे। एक बार विद्यालय जाते समय कोलकाता की सड़क के किनारे भिखारिन को देखकर रुक गए और उसे जेब खर्च के सारे पैसे दे दिये। 'होनहार बीरवान के होत चिकने पात' महान पुरुषों के लक्षण बाल्यावस्था से ही पल्लवित होने लगते हैं।

चन्द्रगुप्त, राणाप्रताप, शिवाजी और गांधी, सुभाषचन्द्र के आदर्श थे। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और फ्रांस की वीरबाला जोन आफ आर्क से इन्होंने स्वतंत्रता पाने का सूत्र सीखा था। इनके युवा मन में नेपोलियन की छवि बसी हुई थी। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से आई. सी. एस. की उपाधि पाने के बाद भी अंग्रेज सरकार की सेवा नहीं की। देशबन्धु चितरंजनदास, रास बिहारी बोस आदि क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में रहे। इन्होंने नेशनल कॉलेज के प्राचार्य पद को विभूषित किया था। नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी फिर मेयर के पद को सुशोभित किया।

जनता की सेवा में ये सदैव आगे होते थे। बंगाल के अकाल और बाढ़ में इनकी सेवा–सहायता की महती भूमिका रही है। ये स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों से प्रभावित थे।

सुभाषचन्द्र बसु मोतीलाल नेहरू की स्वराज पार्टी के सदस्य और त्रिपुरा कॉंग्रेस महाधिवेशन में अध्यक्ष पद को सुशोभित कर फारवार्ड ब्लॉक को संगठित किया था। इनके भाषण में ओज था। युवा इनके अनुगामी होते थे। जब ब्रितानी सत्ता का दमनचक्र चल रहा था और कोलकाता की गलियों में काजी नजरूल इस्लाम की 'अग्निवीरता' की झंकार हो रही तब सुभाषचन्द्र बसु ने युवाजनों को सम्बोधित किया– ''८००० किलोमीटर दूर और सात समुन्दर पार से ये अंग्रेज आकर देश में कैसे अपनी सरकार चला रहे हैं, विदेशियों को देश में रहने का अधिकार किसने दे रखा है?''

इनके उग्र विचारों से भयभीत होकर अंग्रेज सरकार इन्हें कारागार में बार–बार बंद कर दिया करती थी। एक दिन सुभाषचन्द्र वसु ने युवकों को प्रेरित किया। देश के कर्णधारों तुम्हें भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराना है। ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'' ''अब दिल्ली दूर नहीं है। दिल्ली चलो।'' सिपाहियों ने लाठियाँ चलाई। गोलियाँ दागी किन्तु आन्दोलन रुका नहीं।

वीर सुभाषचन्द्र शक्ति के उपासक थे। वे सोलह वर्ष की अवस्था में हिमालय, काशी और मथुरा की तीर्थ यात्रा कर चुके थे। किन्तु वे अध्यात्म और दर्शन से प्रेरित होकर देश की स्वतन्त्रता के लिए बराबर जनता को सम्बोधित कर रहे थे– ''बंगवासियो! तुम लोग दुर्गा और काली की पूजा करते हो। अहिंसा कायरो का मंत्र है। इससे तुम्हें स्वतंत्रता नहीं मिलेगी 'मिलती स्वतंत्रता भीख नहीं।' तुम्हें अस्त्र उठाना ही पड़ेगा। अंग्रेजों के प्रति तुम्हें 'शठं प्रति शाठ्यं' का व्यवहार करना होगा। तुम्हें १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति लानी होगी। टिट, फार टैट।''

अंग्रेज सरकार ने इस वीर पुरुष को कारागार में डाल दिया। पूरे देश में उग्रतम विद्रोह होने लगा। बंगाल की धरती धधक उठी। सड़कों पर गोलियाँ चलने लगीं। 'वन्दे मातरम्' के घोष से गली–गली गूंज उठी।

नेताजी सुभाषचन्द्र वसु ने आधी रात को जगदम्बा भवानी का स्मरण किया तथा कारागार से भाग निकले। अंग्रेज सरकार इन्हें पकड़ने के लिए विश्वभर में जासूसों का जाल बिछा दिया था। मौलवी का वेश बनाकर सुभाष चन्द्र बसु पेशावर में उत्तमचन्द वैश्य के घर में रहे और वहाँ से जर्मनी में आए। जर्मनी के शासनाध्यक्ष हिटलर से उन्होंने मित्रता स्थापित की और पनडुब्बी में बैठकर जापान की ओर चल पड़े।

पनडुब्बी में बैठकर जब सुभाषचन्द्र जापान की ओर जा रहे थे। तब उन्हें भारतमाता के दर्शन की इच्छा हुई। पनडुब्बी बंगाल की खाड़ी तैर रही थी। उस समय पूरब में सूर्य की लालिमा हँस रही थी। उस आलोक में सुभाषचन्द्र ने भारत के दर्शन कर नमन किया वन्दे मातरम्।

मलय देश में आजाद हिन्द फौज का संगठन किया गया। ब्रह्मदेश की नारियों ने अपने सारे सोने के आभूषण निकालकर सुभाषचन्द्र के चरणों में रख दिये। अनेक युवक जय हिन्द बोलते हुए आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने लगे थे।

१८ मार्च १९४४ में आजाद हिन्द फौज आसाम के कोहिमा में पहुँची और वहाँ तिरंगा, फहराया गया। उसी समय जापान द्वितीय महायुद्ध की चपेट में आ गए। हिरोशिमा पर परमाणु बम गिरे। सुभाषचन्द्र बसु को युद्ध बन्द करना पड़ा। जब ये हिरोरितों से मिलने वायुयान से जापान जा रहे थे तब वायुयान में आग लग गई। जापान की आकाशवाणी ने घोषणा की 'भारत का उदीयमान सूर्य अस्त हो गया।'

– मीरजापुर (उ. प्र.)

मछली

– रेखा लोढ़ा स्मित

देख तैरती मछली जल में
प्रश्न उठे मिन्नी के मन में
दिखती कभी सतह पर कैसे
गायब हो जाती है क्षण में

क्या विद्यालय पड़ता जाना
कौन खिलाता इनको खाना
मिन्नी देख नाचती इनको
सोचे क्या ये गाती गाना
कैसी दिनचर्या है इनकी
क्या होता इनके जीवन में
देख तैरती मछली जल में
प्रश्न उठे मिन्नी के मन में

कैसे घर में ये रहती हैं
बापू को बापू कहती हैं
माँ डाँट लगाती है क्या
सर्दी को कैसे सहती है
कौन सिखाए इन्हें तैरना
स्प्रिंग लगी क्या इनके तन में
देख तैरती मछली जल में
प्रश्न उठे मिन्नी मन में

सुन मिन्नी के प्रश्न बताया
जीवन जलचर का समझाया
साँस गिल्स से ये लेती है
शिक्षक ने उसको बतलाया
छोटी बड़ी कई रंगों की
हल्की भारी मिले वजन में
देख तैरती मछली जल में
प्रश्न उठे मिन्नी के मन में

तुम खुद जल के भीतर जाओ
देख पास से अनुभव पाओ
सीख तैरना मिन्नी बोली
बापू मास्क मुझे पहनाओ
अंदर जाकर देखी दुनिया
लगा आ गई हो उपवन में
देख तैरती मछली जल में
प्रश्न उठे मिन्नी के मन में

– भीलवाड़ा (राजस्थान)

जानें चाय के लाभ और हानि

– डॉ. बी. एल. प्रवीण

कोरोना काल में जहाँ एक तरफ इम्यूनिटी बढ़ाने की बात कही जा रही है वहीं हम सदियों से इम्यूनिटी घटाने वाले पेय पदार्थ को पीते रहने के आदी हो गए हैं। प्राय: हम कुछ चीजों की अच्छाई और बुराई को जाने बिना ही जीवन भर उसका सेवन करते रहते हैं। उनमें से चाय पीना बिल्कुल आम बात है। प्रस्तुत है चाय से संबंध में अब तक की भ्रांतियों को दूर करने वाली एक गहन रिपोर्ट।

जी हाँ, पूरी दुनिया में चाय अथवा कहवा पीने का प्रचलन है। सुबह–शाम चाय की चुस्कियाँ लेना आदत–सी बन गई है। हमें पता है कि चाय पीने से मंदाग्नि, हृद्‌पिंड की बीमारी, कलेजे में धड़कन व दर्द की शिकायत हो सकती है। लीवर को नुकसान पहुँच सकता है। फिर भी हम चाय पीते हैं।

आइए, हम जानें चाय के लाभ और हानि।

सच्चाई यह है कि आप किस प्रकार की चाय पी रहे हैं। इसे जाने बिना निष्कर्ष निकालना कठिन है।

मूलत: चाय की कई किस्में होती हैं। ब्लैक टी, ग्रीन टी, यलो टी, व्हाइट टी, ग्रे टी आदि।

जापान की सेन्चा टी ग्रीन टी के रूप में काफी मशहूर एवं महँगी चाय है। लगभग ५५०० प्रति किलो ग्राम। अभी हर्बल टी की अधिक चर्चा है। इसमें मूल रूप से चाय होती ही नहीं है। हर्बल टी में औषधीय फूल–पत्तियाँ एवं जड़ी–बूटियों का मिश्रण होता है।

क्या होती है चाय?

चाय कैमेलिया सिनेन्सिस (Camellia Sinensis) नामक प्लांट कहलाती है। अधिकतर पठारी एवं ठण्डे प्रदेशों में इसके पौधे उगाये जाते हैं। इनकी पत्तियों को प्रोसेसिंग करके बाजार में बेचा जाता है।

चाय में किसी प्रकार के विटामिन अथवा मिनरल्स नहीं पाए जाते। जीरो फैट शुगर, कोलेस्ट्रॉल एवं कैलोरी के बाद भी यह पूरे विश्व का पसंदीदा पेय है। इसमें प्रमुख रूप से कैफिन एवं टैनिन पाया जाता है। २४० ग्राम चाय में किस्मों के अनुसार ११ से ६१ मि. ग्रा. कैफिन हुआ करता है। सबसे अधिक कैफिन ब्लैक टी में पाया जाता है। ग्रीन टी में इसकी मात्रा कम होती है।

क्या है लाभ?

चाय एक प्रकार का एण्टी ऑक्सिडेंस है। इसीलिए कैंसर, मोटापा, हृदय रोग और मधुमेह जैसे रोगों में ग्रीन टी के रूप में इसके प्रयोग का प्रचलन बढ़ा है। कैफिन के चलते यह थोड़ा आराम पहुँचाती है। जिसके चलते हम अभ्यस्त हो जाते हैं। फिर भी हमें न्यूनतम कैफिन वाली चाय का ही उपयोग करना चाहिए।

साइड इफेक्ट्स

टैनिन नामक विजातीय पदार्थ हमारे शरीर को नुकसान पहुँचाता है। काली चाय में ग्रीन टी की अपेक्षा अधिक टैनिन हुआ करता है।

दो–दीन बार से अधिक चाय पीना नुकसानदेह होता है।

अधिक चाय पीने से हमारी नींद में कमी आने लगती है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। पेट में एसीडिटी बढ़ जाती है। फलस्वरूप लीवर को भी नुकसान पहुँचता है।

मनुष्य के मस्तिष्क में मेलाटोनिन नामक हारमोन होता है। इसी के कारण सोते समय स्वत: नींद अनुभव होने लगती है। चाय हमारी इस प्रक्रिया को बाधित करती है।

टैनिन हमारे शरीर के लिए काफी नुकसानदेह है। आंतों में जाकर यह भोजन से प्राप्त होने वाले लौह तत्व (आयरन) को शरीर में अवशोषित होने से रोकता है। फलस्वरूप इससे हमारे शरीर को काफी नुकसान पहुँचता है।

चाय के नुकसान से कैसे बचें?

चाय बनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि यदि दूध की चाय बनानी हो तो चाय की पत्ती डालने के बाद उसे एक मिनिट से अधिक नहीं खौलाना चाहिए। अन्यथा टैनिन चाय में घुल सकता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है।

इसी प्रकार लाल चाय बनाते समय उबलते पानी में दस सेकेंड से अधिक चाय पत्ती को नहीं खौलाना चाहिए ताकि चाय कड़वी न हो। कड़वी चाय में टैनिन अधिक होता है। अत: इससे बचना चाहिए।

होमियोपैथिक औषधि

होम्योपैथी में चाय से जो दवा बनती है उसका नाम है थिया (Thea)। उपरोक्त सारे लक्षणों को ठीक करने के लिए इस दवा का उपयोग होता है। चाय की अधिकता से उत्पन्न होने वाले लक्षणों से बचाव के लिए समय–समय पर चायना आफिसिनेलिस (Cinchona) का व्यवहार काफी लाभकारी होता है। पेट फुलना और भूख–प्यास की कमी में भी चायना ३० का उपयोग काफी लाभकारी होता है।

सांस्कृतिक बाल पहेलियाँ

– जय कुर्मी

लोग कहें वह भई बावरी, सो हरि हाथ बिकानी।
जहर का प्याला पीकर हो गई, जिसकी अमर कहानी।।
दर्द की मारी वन–वन डोली, दर्द मिटा ना रोय।
किसने गाया दर्द मिटे जब, वैद्य सांवलिया होय।।

❆ ❆ ❆ ❆ ❆

हिमगिरि की चोटी में रहते, रामेश्वर से नाता।
भारत की माटी से पुजते, नित्य गंग से नहाता।।
काल कूट को पीकर जिसने, जलता जगत बचाया।
किसको भोले बाबा कहते, कहो समझ में आया।।

❆ ❆ ❆ ❆ ❆

राम कथा हिन्दी में लिखकर, जन–जन तक पहुँचायी।
जिसकी रचना पूजी जाती, शंकर जी को भायी।।
रोया नहीं जन्मते जिसने, राम नाम ही गाया।
किसके घिसते चंदन को ले, प्रभु ने स्वयं लगाया।।

❆ ❆ ❆ ❆ ❆

जूते सिलते थे घर बैठे, प्रभु में लगन लगी थी।
पारस मणि के वे दानी थे, पावन भक्ति जगी थी।।
संत समाज जिसे शिरोमणि कहता, परम तत्व के ज्ञानी।
किसने प्रभु से नाता जोड़ा, तुम चंदन हम पानी।।

– गौरझामर जि. सागर (म. प्र.)

उत्तर– १) मीरा, २) शिवजी,
३) तुलसीदास, ४) संत रविदास

एक लड्डू तीन मित्र

– भूपिंदर सिंह 'आशट'

एक समय की बात है तीन मित्र थे। एक दिन तीनों यात्रा पर निकले। पहले पड़ाव पर जब उन्होंने रसोई बनाई तो चूरमे के चार लड्डू बनाए। तीनों ने एक–एक लड्डू खा लिया। बाकी बचे एक लड्डू के बारे में निश्चय किया कि जब तीनों मित्र सो जायें तब जिसका सपना सबसे अच्छा होगा यह लड्डू उसी को मिलेगा।

तीनों मित्र सो गए। सुबह उठने के बाद पहले ने कहा– ''मुझे इतना अच्छा सपना आया है कि लड्डू मुझे ही मिलेगा।'' बाकी दोनों ने कहा– ''पहले अपना सपना तो सुनाओ?'' तब पहले वाले ने अपना सपना सुनाया। ''मैं एक बड़े शहर में पहुँचा। अभी मैं संध्या पूजन कर ही रहा था कि आठ–दस आदमी आए और बोले– हमारे साथ चलो तुम्हारा विवाह करवाएंगे। मैंने सारी बात पूछी, तो उन्होंने बताया ''यहाँ के राजगुरु की पुत्री का विवाह आज होने वाला था बारात आने पर ज्ञात हुआ कि दूल्हा दूसरा है, सगाई के समय अलग लड़का बताया गया था। दूल्हे को देखकर राजगुरु क्रोधित हो गये। उन्होंने दूल्हे समेत बारात को धक्के मारकर वापस भेज दिया। हमें उन्होंने यह आदेश दिया है कि जो भी बुद्धिमान व विवेकी तरुण मित्रे, उसे तुरन्त ले आओ। उसी के साथ कन्या का विवाह कर दिया जाएगा। हमें आप जैसा योग्य युवक कहाँ मिलेगा। हमने तय किया है कि राजगुरु की पुत्री का विवाह आप से किया जाये। कृपया हमारे साथ चलिये।''

मैं उनके साथ राजगुरु के महल में पहुँचा, वहाँ मेरा विवाह उस लड़की के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मुझे सुन्दर व सुशील पत्नी मिली साथ ही राजगुरु का दामाद बनने के कारण राज सम्मान भी खूब मिला। बोलो है ना अच्छा सपना?''

यह सुनकर दूसरे ने कहा– ''मित्र, मेरा सपना तो तुमसे भी अधिक अच्छा है।'' यह कहकर उसने अपना सपना सुनाना प्रारम्भ कर दिया। उसने कहा– ''मैं एक शहर में पहुँचा, यहाँ के राजा की मृत्यु हो गई थी। उस राज्य में यह परम्परा थी कि यदि राज नि:संतान मर जाता है तो सारे राज्य में ढिंढोरा पिटवा कर यह सूचना दे दी जाती है कि बाहरवें दिन सभी लोग एक विशाल मैदान में इकट्ठा हो जायें। इसके बाद एक हाथी को सूंड में माला देकर घुमाया जायेगा। वह हाथी जिसके गले में माला डाल दें, वहीं राजा बनेगा। संयोगवश मैं उसी दिन उस शहर में पहुँचा। वह राजा की मृत्यु का बारहवां दिन था। वहाँ पर भारी भीड़ देख मैं भी वहीं खड़ा हो गया। उस हाथी को न जाने क्या सूझी कि वहा सारी भीड़ को चीरता हुआ मेरे पास आ पहुँचा और माला मेरे गले में डाल दी।

माला गले में पड़ते ही भीड़– 'महाराज की जय हो, महाराज की जय हो' के नारे लगाने लगी। एक बार तो मैं हक्का–बक्का रह गया और समझ ही नहीं पाया कि यह सब कैसे और क्यों हो गया। फिर तुरंत ही संभला और अपने भाग्य को सराहा। मुझे हाथी पर बैठाकर राजमहल ले जाया गया। इक्यावन तोपों की सलामी के साथ मेरा राजतिलक हुआ। इस प्रकार मैं एक विशाल साम्राज्य का स्वामी बन गया।''

इतना कहकर दूसरे मित्र ने पहले मित्र से कहा– ''बोलो, मेरा सपना तुम्हारे सपने से अच्छा है न?'' पहले ने सहमति में सिर हिला दिया। अब दोनों तीसरे से बोले– ''तुम भी अपना सपना सुनाओ।''

तीसरे ने कहा– ''क्या बताऊँ, मुझे तो इतना डरावना सपना आया कि अब तक थर–थर कांप रहा हूँ। मुझे सपने में एक भूत दिखाई दिया, बोला– जल्दी से उठ मेरे सामने अभी इसी समय लड्डू खा।''

मैंने कहा– ''हम तीन मित्र हैं और शर्त लगाकर सोए हैं।'' इस पर भूत ने कहा– ''शर्त की बात छोड़ो। तू लड्डू खाता है या मैं तुझे खाऊँ?'' सच कहता हूँ भाई, मैं तो इतना डर गया कि बस। मुझे मेरी मृत्यु दिखाई देने लगी। मरता क्या न करता। बिना इच्छा के वह लड्डू मुझे खाना पड़ा।''

दोनों मित्रों ने बर्तन से कपड़ा हटाया, तो वहाँ से लड्डू गायब था। दोनों ने खीझकर पूछा– ''जब भूत आया था तो हमें पुकारा क्यों नहीं?''

तीसरा बोला– ''मैंने तुम दोनों को पुकारा था, लेकिन एक ओर तो (पहले की ओर संकेत करके) शादी के गीत गाये जा रहे थे, और दूसरी ओर (दूसरे की ओर संकेत करके) इनके राज तिलक की तैयारियाँ चल रही थी। बाजे बज रहे थे, तोपें गरज रही थीं। उस शोर में तुम दोनों ही मेरी आवाज नहीं सुन पाये। जबरदस्ती चूरमे का लड्डू मुझे खाना पड़ा। अगर मैं लड्डू ना खाता, तो भूत मुझे खा जाता।''

– पटियाला (पंजाब)

श्रद्धांजलि

आदरणीया मृदुला सिन्हा नहीं रही

साहित्य जगत से एक ममतामयी छाया तिरोहित

केवल उनका नाम ही मृदुला न था वे मृदुल व्यवहार की जीवंत मूर्ति थीं। साहित्य में भारतीयता कैसे प्रतिष्ठित की जाती है इसका कोई उत्तम उदाहरण देखना हो तो उनकी सृजन यात्रा का दर्शन करना चाहिए जिसका प्रत्येक पग नपा तुला और भारत की माती की लोकगंध से गमकता मिलेगा। 'देवपुत्र' पर उनका अत्यन्त वात्सल्य था। वे २०१६ के 'देवपुत्र गौरव सम्मान' की मुख्य अतिथि थी। देवपुत्र के मानद संपादक डॉ. विकास दवे को उन्होंने ही स्वच्छ भारत अभियान का ब्राण्ड एम्बेसेडर बनाया। अत्यन्त पारिवारिक भाव से साहित्यकार कुल की ममतामयी वयोवृद्ध संरक्षिका का अवसान निश्चय ही एक बड़ी क्षति है। देवपुत्र उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

दिग्विजयी हेमचंद्र

– डॉ. परशुराम गुप्त

बच्चो! तुम क्या ऐसे किसी हिन्दू वीर को जानते हो जिसने तीन वर्ष में लगातार बाईस लड़ाइयाँ जीतीं हों? जिसे मध्यकालीन भारत का नेपोलियन कहा गया हो? जिसने मुगलों को देश से बाहर निकालने का प्रण लिया हो? एक तूफान की भाँति जिसने आगरा दिल्ली को जीत कर दिल्ली के पुराने किले में अपना राज्याभिषेक करवाया हो? **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की हो, अपने नाम के सिक्के ढलवाये हों तथा साढ़े तीन सौ वर्षों के सल्तनत काल के बाद पुन: दिल्ली पर **'हिन्दू राज्य'** स्थापित किया हो?

जिसने अपनी कर्मठता, सत्यनिष्ठा और लगन के बल पर एक सामान्य दुकानदार (दोसर वैश्य) से उठकर प्रधान सेनापति, महामंत्री और सम्राट के महिमा मण्डित आसन तक पहुँचा हो? जिसकी विशाल सेना में १५०० हाथी रहे हों, जिनमें से प्रत्येक हाथी इतना शक्तिशाली रहा हो कि वह छोटी–मोटी सेना को अकेले ही ध्वस्त कर देता हो, जो तूफान की गति से आगे बढ़ते रहे हों और सैनिकों तथा घुड़सवारों को घोड़े सहित हवा में उछाल देते रहे हों और जिन्हें शक्कर, मक्खन तथा चावल के बड़े–बड़े गोले बनाकर खिलाया जाता रहा हो?

वह एक ऐसा दिग्विजयी हिन्दू सम्राट था जिसने एक प्रचण्ड सेना के साथ पानीपत के मैदान में, मुगल सेना को टक्कर दिया। उस समय वह हवाई नामक हाथी की पीठ पर बैठा हुआ अपनी सेना का संचालन कर रहा था।

वह जीत के कगार पर ही था कि एक बाण आकर उसकी आँख में लगा और वह हाथी के हौदे में गिर गया। लेकिन उसने हिम्मत से काम लिया। वह उठा, बाण आँख से खींच कर बाहर निकाला, जिसके साथ उसकी पुतली भी बाहर आ गई। खून से चेहरा रंग गया। फिर भी पुतली को एक रूमाल में बांधा और आँख पर पट्टी बांधकर पुन: युद्ध लड़ने लगा। लेकिन ऐसा वह अधिक समय तक न कर सका और अचेत होकर हाथी के हौदे में ही गिर गया। अपने नेता को दिवंगत जान उसकी सेना में भगदड़ मच गई और वह जीती हुई बाजी हार गया। बाद में अकबर ने उसके मूर्छित शरीर को मारकर गाजी की उपाधि धारण की। हिन्दू राष्ट्र के लिए यह उस वीर का सर्वोच्च बलिदान था।

यह बलिदानी, महान हिन्दू वीर **'सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य'** थे। जिनका जन्म अश्विन शुक्ल १० विजया दशमी संवत् १५५८ विक्रमी अर्थात सन् १५०१ में अलवर राजस्थान के माछेरी (देवती–सजरी) नामक गाँव में हुआ था। जिन्हें प्रेम से लोग **'हेमू'** कहकर पुकारते थे।

हमें उनके जैसे सत्यनिष्ठ, योग्य, कर्त्तव्य निष्ठ, धैर्यवान, देशभक्त, साहसी व स्वाभिमानी बनने की शपथ लेना चाहिए।

– महराजगंज (उ. प्र.)

संविधान गीत

– हरिलाल 'मिलन'

जय जय जय जय भारत महान!
जय जय भारत का संविधान!!
हर अनुच्छेद विधि से गर्वित,
अध्याय, अधिनियम संदर्भित,
कर शिरोधार्य भारतवासी,
आस्था के लिए आत्म–अर्पित।
हर धड़कन हुई स्वावलम्बी
स्वाधीन हुए हर देह–प्राण।
जय जय भारत का संविधान!
अपवादहीन तव लोकतंत्र,
संस्कृति, शिक्षा के मूलमंत्र,
धारक हो सत्य–अहिंसा के
रक्षार्थ स्वयं के युद्ध–यंत्र।
हे महाशक्ति! हे सर्वश्रेष्ठ!!
उच्चतम, विशद, विस्तृत, वितान।
जय जय भारत का संविधान!
उत्कर्षों का उद्‌बोधन हो
आदर्शों का सम्बोधन हो,
जो सत्यम् शिवम् सुन्दरम् हो
संरचना हो संशोधन हो।
एकता अखण्डित रहे सदा
अक्षर–अक्षर हों सावधान।
जय जय भारत का संविधान!
मानव का मंगल सोचो नित,
दृग–दृग से आँसू पोंछो नित,
हर कदम सदा मंजिल पाए
समता के सत्पथ खोजो नित।
हो अमर तुम्हारा राष्ट्रगीत
हो अमर तुम्हारा राष्ट्रगान
जय जय भारत का संविधान!

– कानपुर (उ. प्र.)

आओ, आओ खेलें खेल

– चाँद मोहम्मद घोसी

– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

रबड़ को गरम करें

– मूल: प्रो. राजीव ताम्बे
– अनुवाद: सुरेश कुलकर्णी

इसके लिए सामग्री लगेगी–

साईकिल की ट्यूब का ६ इंच लम्बा टुकड़ा, कैंची।

चलो करें शुरुआत।

साईकिल की दुकान से ट्यूब का टुकड़ा साधारण ६ इंच लम्बा लेकर तो आप आ गये, अब इसे साफ धो लो। वह अपने माथे को लगाये और यह देखें कि वह कितना गरम है, या ठंडा है? अब आपको रबड़ के उस टुकड़े को दोनों हाथों में पकड़कर जोर से खींचना है और ढीला छोड़ना है। यह फटाफट २० से २५ बार करो और वह टुकड़ा अपने माथे पर लगाओ।

क्या हुआ?

टुकड़ा गरम हुआ है। और उस टुकड़े को अधिक बार खींचा तो चटक सकता है।

ऐसा क्यों होता है?

रबड़ के टिशू ये वक्र या गोलाकार रहते हैं। जब ताकत लगाकर रबड़ को खींचते हैं तो वह टिशू सीधे होकर खींचे जाते हैं और छोड़ने पर फिर से गोलाकार होते हैं। बार–बार यह प्रक्रिया अपनाने के कारण उसमें घर्षण होकर मूल तत्व के विपरीत होने से वे गरम हो जाते हैं। बार–बार खींचने से गरम ठंडा–गरम ठंडा यह घर्षण विकर्षण प्रक्रिया के कारण रबड़ का टुकड़ा गरम हो जाता है। आटे की चक्की आपने देखी ही होगी उसमें जो मोटर लगती है उस पर भी रबड़ का बेल्ट होता है। अधिक गरम होने से वह कई बार उतर जाता है। उसके पीछे घर्षण और विकर्षण यही होता है।

क्या रबड़ बेण्ड पर यह क्रिया हो सकती है?

करके देखो और आप स्वयं वैज्ञानिक बनो।

– इन्दौर (म. प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

- रिक्षा वाले की लड़की गोल्ड मेडल लाई,
  रिक्षा वाले का बेटा आईएएस बना,
  रिक्षा वाले की बेटी के ९९ प्रतिशत अंक आए,
  समाचार पढ़–पढ़कर बच्चे जिद कर रहे हैं–
  ''पिताजी आप भी रिक्षा ले लो....''

- एक शहरी लड़का नदी में बतखों पर निशाना लगा रहा था। निशाना चूक गया और पानी भर रही एक गाँव की महिला का घड़ा फूट गया। वह उस महिला के पास गया और बोला– ''सॉरी फार दैट।''

  उस ग्रामीण महिला ने झन्नाटेदार थप्पड़ मारा और बोली– ''ससुर के नाती, एक तो घड़ा फोरि दिहिस और ऊपर से कहत है– साड़ी फार देब, अरे हम तोहार करेजा निकाल लेब... समझे।''

- बहिनजी (छात्र सोनू से) – अच्छा बताओ, अगर तुम्हारे विद्यालय के सामने कोई बम रख दे तो तुम क्या करोगे?

  सोनू – बहिनजी! २–४ मिनिट देखेंगे अगर कोई ले जाता है, तो ठीक है, नहीं तो शिक्षक कक्ष में रख देंगे।

- कितनी भी पढ़ाई कर लो, डिग्री ले लो, लेकिन जब रेस्टॉरेंट के दरवाजे पर PULLऔर PUSH लिखा देखते हैं तो पल भर के लिए सोचना पड़ता है 'धकेलना है' या 'खींचना है'...।

– विष्णु प्रसाद चौहान, ढाबला हरदू

समय

चित्रकथा-

तुम्हारे यहां आकर समय का पता ही नहीं चला...
कैसे फटाफट बातों में गुजर गया.
हां देखो ना, लग ही नहीं रहा..
कि तुम पूरे तीन घंटे दस मिनट बाद यहां से जा रहे हो ...

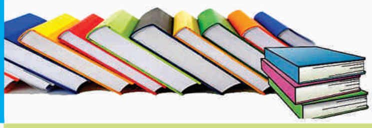

पुस्तक परिचय

बाल साहित्य जगत की सुप्रसिद्ध रचनाकार सौ. पद्मा चौगाँवकर की बाल पाठकों को मनोहर भेंट

अनदेखे रंग

मूल्य १००/-
प्रकाशक- बोधि प्रकाशन-सी-४६,
सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्स.
नाला रोड, २२ गोदाम, जयपुर-६ (राज.)

प्रस्तुत पुस्तक में पद्माजी की चौदह रोचक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर स्थित महत्वपूर्ण बाल कहानियाँ है। सरस, सुबोध, सरल भाषा और भावपूर्ण चित्रण के साथ यह कृति अत्यंत सुन्दर बन पड़ी है।

आ री चिड़िया

मूल्य ५०/-
प्रकाशक- बोधि प्रकाशन-सी-४६,
सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्स.
नाला रोड, २२ गोदाम, जयपुर-६ (राज.)

पद्माजी की यह छब्बीस मनोरम बाल कविताओं का संग्रह है इसमें सरलता और गेयता का ऐसा मणिकांचन योग है कि ये कविताएँ न केवल आपका मनोरंजन करेंगी अपितु आपको आसानी से कंठस्थ भी हो जाएगी।

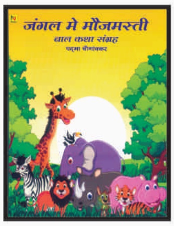

जंगल में मौजमस्ती

मूल्य ६०/-
प्रकाशक- निखिल पब्लिशर्स एण्ड
डिस्ट्रीब्यूटर्स, ३७, शिवराम कृपा,
विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा (उ. प्र.)

यह पद्मा चौगाँवकर जी की ग्यारह बाल कथाओं का संग्रह है। वन्यजीवन को माध्यम बनाकर बच्चों को रोचक शिक्षाएं देती ये कहानियाँ बाल मन को मूल्य बोध देने वाली है।

आचार्य भगवत दुबे बाल साहित्य के सुप्रसिद्ध एवं अनुभवी रचनाकार है। उनकी दो कृतियाँ आपके लिये प्रस्तुत है।

छुपन छुपाई

मूल्य १५०/-
प्रकाशक- पाथेय प्रकाशन
११२, सराफा वार्ड,
जबलपुर-४८२००३ (म. प्र.)

बाल मन को लुभाने वाली, उनके कंठ में बस जाने वाली और हृदय को सरसाने वाली ५७ बाल कविताओं का यह खजाना निश्चित रूप से आप बच्चों को बहुत भाएगा।

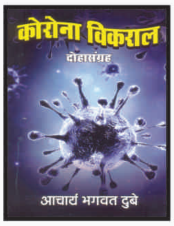

कोरोना विकराल

मूल्य १६०/-
प्रकाशक- पाथेय प्रकाशन
११२, सराफा वार्ड,
जबलपुर-४८२००३ (म. प्र.)

कोरोना काल की की कठिनाई से सारा विश्व परिचित है बच्चों ने भी यह दुष्काल बड़ी विपरीतता में पर धैर्य से काटा है। कोरोना विषयक बृहद् दोहावली के रूप में आचार्यजी ने इन अनुभवों को अंकित किया है।

कविता

उजाला लाऊँ

– मेराज रजा

सूरज चाचू सो जाएँ जब,
चुपके–चुपके आऊँ।
काले–काले गाँव–शहर में,
खूब उजाला लाऊँ।

नील गगन के चंदा–तारे,
नहीं दिया, ना बाती।
दही–बड़े, ना आइसक्रीम,
बिजली मुझको भाती।

बाबा एडीसन लाए थे,
मुझको इस संसार में।
मेरा नाम बताकर झटपट,
रहो सदा उजियार में।

– बाजिदपुर (बिहार)

आपकी पाती

'देवपुत्र' में प्रकाशित सार्थक सामग्री न केवल बच्चों, हम बड़ों के लिए भी प्रेरणादायक होती है। पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। **– राजेंद्र निशेश, चण्डीगढ़**

देवपुत्र का नवम्बर २०२० का अंक मिला धन्यवाद। दीपोत्सव की झलक के रूप में मुख पृष्ठ बहुत आकृष्ट करता है। अपनी बान के अंतर्गत इस पर्व की पृष्ठभूमि की उन स्मृतियों के संक्षिप्त उदाहरण हैं जो अब स्मृति शेष होते जा रहे हैं। बड़े भैया की मंशा हार्दिक प्रशंसा योग्य है। डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी की कहानी ''खुशियों के दीप'' परस्पर खुशियाँ बाँटने का संदेश है।

बाल अधिकार दिवस पर अश्वनी कुमार पाठक की कहानी ''भिखारी'' दयनीय असहाय को सहायता पहुँचाने की संवेदनशील अपील है। पत्रिका की अन्य विविधताएँ पत्रिका की अभिराम तथा प्रणाम करने योग्य इंद्रधनुषी परम्पराएँ हैं। गोपाल जैसे बच्चों की दशा को दिशा देते रहने का सारस्वत प्रयास सराहनीय है। संपादकीय टीम को बधाई सहित शुभकामनाएँ।

– राजा चौरसिया, उमरियापान, कटनी (म. प्र.)

छुपे रजाई में बैठे हैं

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

खिड़की में से, दरवाजे से, या फिर रोशनदान से।
ठंडी हवा आई कमरे में, आ टकराई कान से।।
घुसी नाक में, धँसी पेट में,
आँखें सिर सहलाये।
शीत लहर से, खड़े रोंगेटे,
दादाजी घबराए।।
अलमारी से स्वेटर खींची, ज्यों तलवार म्यान से।।
मफलर निकले कंबल निकले,
निकली गरम रजाई।
दादी माँ तो एक अंगीठी,
में कोयला भर लाई।।
आग जलाकर, लगी फूँकने, कोयला अब जी जान से।।
बचो ठंड से, शीत लहर है,
निकलो न अब बाहर।
लगा गूंजने घर के भीतर,
अम्मा का मीठा स्वर।।
छुपे रजाई में बैठे हैं, चाचा अब तक शान से।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

कविवर सुमित्रा-नंदन पंत एक बार अपने एक साहित्यिक मित्र के यहाँ ठहरे हुए थे। उनके मित्र का नौकर बहुत बूढ़ा था। उसके बुढ़ापे से दया प्रकट करते हुए पंतजी ने पूछा– ''क्यों बाबा! तुम्हारे कोई पुत्र नहीं है क्या जो इस आयु में तुम्हें काम करना पड़ रहा है?''

वृद्ध नौकर ने लम्बी सांस खींचते हुए कहा– ''एक नहीं दो–दो पुत्र हैं पर अपना भाग्य।''

पंतजी बोले– ''कुछ बताओ तो सही क्या हुआ उन्हें?''

''बड़ा लड़का तो विवाह के बाद ही पत्नी को लेकर अलग हो गया और छोटे की मत पूछिए।'' नौकर ने उदास होते हुए कहा।

''क्यों आवारा निकल गया क्या?'' पंतजी ने फिर पूछा। ''नहीं बाबूजी! आवारा निकल जाता तो भी कुछ संतोष होता। अपने खाने–पीने का तो कुछ ख्याल करता। पर वह तो कवि निकल गया। सारी दुनिया में घूम–घूमकर दिनरात बस कविताई करता रहता है।''

सुनकर पंतजी चुप।

पतंग

– शुभम पाण्डेय 'गगन'

चूमें अम्बर भागे तेज
करतब कई दिखाती है।
पतंग कितनी सुंदर है
मन को सबके भाती है।

कोई लाल कोई है पीली
छोटू लाया उसकी नीली।
सारे मिलकर खींचे डोर
पल में उड़कर दूर मिली।

चूक जरा सा जाओगे जो
यह कट कर उड़ जाती है।
कभी-कभी यह उलझे
जाकर पेड़ों में फंस जाती है।

मेरी पतंग चली हवा में
आसमान छू कर आयेगी।
वापस जब यह लौटेगी तो
चंदा तारें लायेगी।

छत पर सारे देख रहे हैं
उड़ती हुई पतंगों को।
बच्चे मांझे लड़ा रहे हैं
मन में लिए उमंगों को।

– नवाबगंज गोण्डा (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१२/२०२० प्रेषण तिथि ३०/१२/२०२० प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना